

जैविक कृति



मैं कामधेनु सेवक सहदेव भाटिया विद्युत अभियंता, अखिल विश्व कामधेनु परिवार 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदबाद गुजरात 382415 मोबाइल 9662407242, 8733008557 2011 से 100 सालों तक व्यवस्था परिवर्तन को ध्यान में रखकर किसानों के लिए जैविक कृनि पर यह पुस्तक वस्तुनि-ठ प्रश्नोत्तर के साथ में सरल हिंदी में पहली बार प्रकाशित करने जा रहा हूं.

मध्यप्रदेश सरकार के द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका उद्यमिता शिक्षित बेरोजगारों को गोमय क अधिकतम उपयोग करने के लिए अलग अलग उत्पाद बनाने तथा जैविक कृनि के आधार पर स्वरोजगार दिलवाने के लिए 20 सालों से प्रयत्नशील है.

मेरे 2 लेख सचित्र गोमय से धूप नवम्बर 2004 तथा अग्निहोत्र से कृनि जून 2009 में 7 पन्नों का भारत की सबसे लोकप्रिय मासिक पत्रिका उद्यमिता में प्रकाशित हुए हैं. पाठकों की मांग को ध्यान में रखकर पुनः 2012 में नवम्बर में प्रकाशित होने जा रहे हैं.

3 लाख बच्चे 15 अक्टूबर 2012 को 17 राज्यों में वस्तुनि-ठ प्रश्नोत्तर पर आधारित परीक्षा में भाग ले रहे हैं.

100 प्रतिशत गोरक्षा विश्व में जैविक कृनि के आधार पर ही करना संभव है.

किसानों में सचित्र एवं सरल हिंदी में प्रकाशित जैविक खेती पुस्तक की विशेष मांग है.

जैविक कृनि पर वीडियो डीवीडी सरल हिंदी में तैयार कर हर किसान को देनी है. जैविक कृनि पर जानकारी कामधेनु चैनल पर प्रसारित करवाना है. इंटरनेट पर पूरे विश्व में हर किसान तक विचार पहुंचाने के लिए 53 सालों से मैं लगातार सक्रिय हूं. मेरे द्वारा एक

लोकप्रिय प्रतियोगिता कौन बनेगा गोवंश सेवक? तैयार की गयी है तथा हर किसान को प्रतियोगिता से जोड़ना है. प्रत्येक प्रश्न के चार संभावित उत्तर दिये गये हैं तथा सही उत्तर का चुनाव करना है.

प्रतियोगिता को हर गांव में आयोजित करने के लिए प्रायोजकों की आवश्यकता है. विजेताओं को उचित सम्मान देने के लिए अच्छे पुरस्कारों की आवश्यकता है. आप यदि मेरे विचारों से सहमत हैं तो ओफसेट पर जैविक कृनि पर पुस्तक प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन के रूप में आर्थिक सहयोग जरूर करें.

व्यवस्था परिवर्तन 2011 से प्रारम्भ हो गया है. प्रकृति मानव से प्रसन्न नहीं है इसलिए मानव को चेतावनी दे रही है. मानव यदि प्रकृति के संकेत को नहीं समझेगा तो महाविनाश निश्चित है. 100 सालों तक व्यवस्था परिवर्तन चलेगा. रोज रोज मरने से एक बार मरना अच्छा है.

वर्तमान व्यवस्था से मानव संतु-ट नहीं है. मानव व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए अंदर से आतुर है.

नेडेप खाद

- 1 जैविक खाद में सबसे लोकप्रिय खाद कौन सी है?
अ. नेडेप खाद ब. सींग खाद
स. केचुआ खाद द. कचरा खाद
- 2 नेडेप के खोज करने वाले कौन हैं?
अ. स्वर्गीय श्री नारायणराव देवराव पंडरीपांडे जी
ब. श्री मोहनशंकर जी देशपांडे
स. श्री सुभा-न पालेकर
द. श्री हरीश जोशी जी
- 3 नेडेप में कितने माह में खाद बन जाती है?
अ. 3 से 4 माह ब. 6 माह
स. 8 माह द. 12 माह
- 4 नेडेप में कितनी खाद एक बार में बनती है?
अ. 2.7 टन ब. 3 टन
स. 4 टन द. 5 टन
- 5 नेडेप में गोबर की आवश्यक मात्रा कितनी है?
अ. 1400 किलो ब. 1500 किलो
स. 1600 किलो द. 1650 किलो
- 6 वर्तमान में कुल कितनी नेडेप खाद तैयार होती है?
अ. 2.7 प्रतिशत ब. 2 प्रतिशत
स. 1 प्रतिशत प्रतिशत द. 0.22 प्रतिशत
- 7 नेडेप खाद भारत में कितने राज्यों में बनायी जाती है?
अ. 12 ब. 28
स. 15 द. 19

सींग खाद

- 8 कम लागत में बनकर मंहगी बिकने वाली खाद कौन सी है?
अ. सींग खाद ब. केचुआ खाद
स. समाधि खाद द. कचरा खाद
- 9 सींग खाद कब बनायी जाती है?
अ. रोहिणी नक्षत्र में ब. शरद पूर्णिमा
स. दीपावली द. होली
- 10 सींग खाद एक बार में कितनी बनती है?
अ. जितनी चाहिये ब. असीमित
स. बहुत अधिक द. बहुत कम
- 11 सींग खाद कब निकाली जाती है?
अ. 6 माह बाद ब. गर्मी के समय
स. कभी भी द. मार्च माह
- 12 सींग खाद बनाते समय क्या सावधानी होनी चाहिये?
अ. सींग में दरार नहीं होनी चाहिये ब. सींग टूटा नहीं होना चाहिये
स. सींग अधिक दूध देने वाली गाय द. सींग रंगहीन होना चाहिये
- 13 सींग खाद एक फसल में कितनी बार देना चाहिये?
अ. 2 ब. 3
स. 4 द. 5
- 14 सींग खाद की आवश्यक मात्रा एक एकड़ के लिये कितनी है?
अ. 30 ग्राम ब. 35 ग्राम
स. 65 ग्राम द. 1 ग्राम
- 15 सींग खाद किस सिद्धांत पर कार्य करती है?
अ. नक्षत्रीय सिद्धांत ब. आकाशीय सिद्धांत
स. बायोडायनामिक द. गुरुत्वाकर्षण

16 सींग खाद के कितने प्रकार हैं?

- अ. 9 ब. 8
स. 7 द. 1

17 सींग खाद का कौन सा प्रकार बहुत अधिक लोकप्रिय है?

- अ. 500 ब. 501
स. 502 द. 503

18 1 सींग का उपयोग कितने समय तक किया जाता है?

- अ. 5 साल ब. 4 साल
स. पतला होने तक द. आजीवन

19 सींग खाद में कौन से जीवाणु हैं?

- अ. बेसिलस राडचेन ब. ग्राम कोकस कल्स्टर
स. राइजोपस द. एसपर्जीलस

20 सींग खाद के क्या लाभ हैं?

- अ. रोजगार को बढ़ावा ब. गोपालन को बढ़ावा
स. सींग का उपयोग द. पानी की बचत

21 सींग खाद का बिक्री मूल्य कितना है?

- अ. 4000 रु प्रति किलो ब. 2000
स. 1000 द. 500

22 सींग खाद को बढ़ावा देने के लिये क्या चाहिये?

- अ. सींग बैंक ब. प्रचार
स. अनुसंधान द. गाय

501

23 सींग खाद 501 कब बनायी जाती है?

- अ. बसंत ऋतु के अंत में ब. बरसात में
स. ठंडी में द. किसी समय में

24 501 खाद का असर किस पर होता है?

- अ. पत्तों पर ब. तनों पर
स. जड़ों पर द. शाखाओं पर

25 एक एकड़ भूमि के लिये 501 खाद की कितनी मात्रा आवश्यक है?

- अ. 1 ग्राम ब. 2 ग्राम
स. 3 ग्राम द. 4 ग्राम

26 501 में प्रयुक्त सामग्री कौन सी है?

- अ. सिलिका चूर्ण ब. गोबर
स. गुड़ द. गोमूत्र

27 सिलिका चूर्ण किससे तैयार किया जाता है?

- अ. चकमक पत्थर ब. रेती
स. संगमरमर द. सिलिका

28 सिलिका चूर्ण क्या कार्य करता है?

- अ. पौधों को मजबूत बनाता है. ब. पत्तों को मजबूत बनाता है
स. प्रकाश संश्लेषण क्रिया में वृद्धि द. अंगूरों में मीठास वृद्धि

जैविक खाद

29 जैविक खाद में सबसे आसानी से बनने वाली खाद कौन सी है?

- अ. मटका खाद ब. समाधि खाद
स. कचरा खाद द. केचुआ खाद

30 जैविक खाद में सबसे जल्दी बनने वाली खाद कौन सी है?

- अ. मटका खाद ब. कचरा खाद
स. सींग खाद द. केचुआ खाद

31 मटका खाद की अवधि कितने दिनों की है?

- अ. 4 दिन ब. 10 दिन
स. 20 दिन द. 1 माह

32 मटका खाद के लिये ताजे गोबर की मात्रा कितनी चाहिये?

- अ. 15 किलो ब. 20 किलो
स. 25 किलो द. 30 किलो

33 मटका खाद के लिये गोमूत्र की मात्रा कितनी चाहिये?

- अ. 15 लीटर ब. 20 लीटर
स. 25 लीटर द. 30 लीटर

34 मटका खाद के लिये गुड़ कितना चाहिये?

- अ. 250 ग्राम ब. 500 ग्राम
स. 1 किलो द. 2 किलो

35 मटका खाद के लिये पानी की मात्रा कितनी चाहिये?

- अ. 15 लीटर ब. बहुत कम
स. बहुत अधिक द. पानी नहीं चाहिये

चार गढढा विधि

36 चार गढढा विधि में कितना खाद बन जाता है?

- अ. 4000 किलो ब. 5000 किलो
स. 6000 किलो द. 7000 किलो

37 चार गढढा विधि में कितना समय लगता है?

- अ. 3 माह ब. 8 माह
स. 5 माह द. 4 माह

समाधि खाद

38 समाधि खाद के लिये कितना समय लगता है?

- अ. 6 माह ब. 4 माह
स. 20 दिन द. 1 दिन

39 समाधि खाद किससे बनता है?

- अ. मरे हुए गोवंश से ब. मानव
स. गोबर द. रसायन

40 समाधि खाद का बिक्री मूल्य कितना है?

- अ. 4000 रु प्रति किलो ब. 2000
स. 1000 द. 500

जैविक कीटनाशक

41 जैविक कीटनाशक बनाने के लिये महत्वपूर्ण क्या है?

- अ. गोमूत्र ब. नीम
स. लहसून द. तंबाकू

42 जैविक कीटनाशक का उपयोग करना क्यों लाभदायक है?

- अ. सस्ता है. ब. बनाना आसान है
स. मांग अधिक है. द. आसानी से उपलब्ध है.

43 जैविक कीटनाशक उपयोग करना स्वास्थ्यवर्धक क्यों है?

- अ. स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव नहीं पड़ता है.
ब. कीड़ों को हमेशा के लिये मारता है
स. बीमारियों को रोकता है.
द. रसायनरहित है.

44 जैविक कीटनाशक बनाने के लिये गोमूत्र का उपयोग क्यों करना चाहिये?

- अ. आसानी से उपलब्ध है. ब. सस्ता है.
स. गोमूत्र में कीटनाशक गुण हैं. द. गोमूत्र बहुत ही तेज है.

45 जैविक कीटनाशक बनाने के लिये किस गोमूत्र का उपयोग करना चाहिये?

- अ. देशी गाय का ब. देशी बैल का
स. देशी बछिया का द. ताजे गोमूत्र का

46 गोमूत्र के साथ किस को मिलाने से जैविक कीटनाशक बनता है?

- अ. नीम ब. छाछ

47 जैविक कीटनाशक के लिये गाय के दूध से तैयार अम्लीकृत पदार्थ कौन है?

अ. छाछ ब. दही स. छन्ना पानी द. पंचगव्य

48 हरी इल्ली को दूर करने के लिये जैविक कीटनाशक का महत्वपूर्ण घटक कौन है?

अ. गोमूत्र ब. छाछ स. तम्बाकू द. लहसून

49 विदेशों में जैविक कीटनाशकों की मांग सबसे अधिक क्यों है?

अ. रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग करने पर कैंसर की बीमारी बढ़ी है.
ब. विश्व में जागरूकता बहुत अधिक बढ़ गयी है.
स. रासायनिक कीटनाशक मंहगे हैं.
द. जैविक कीटनाशक सस्ते हैं.

50 भारत में जैविक कीटनाशकों का प्रयोग बहुत ही कम है क्योंकि?

अ. अज्ञानता और आलस के कारण
ब. दूरदर्शन में रासायनिक कीटनाशकों के विज्ञापन आ रहे हैं.
स. जैविक कीटनाशक बनाने के लिये कोई तैयार नहीं है.
द. जैविक कीटनाशकों पर विश्वास नहीं है.

51 जैविक कीटनाशकों को विश्व में बढ़ावा कैसे मिले?

अ. रासायनिक कीटनाशकों के साथ जैविक कीटनाशकों की तुलना कर.
ब. गांव गांव में जागरूकता उत्पन्न करने के लिये जैविक कीटनाशकों को तैयार करने का प्रशिक्षण देना.
स. रासायनिक कीटनाशकों के प्राणघातक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी देना
द. इंटरनेट पर जैविक कीटनाशक पर विस्तार से जानकारी उपलब्ध करवाना.

52 जैविक खाद का उपयोग भारत में बहुत कम क्यों है?

अ. रासायनिक खाद की मांग अधिक है.
ब. रासायनिक खाद की लोकप्रियता के कारण
स. जैविक खाद पर विश्वास नहीं है.
द. रासायनिक खाद के नुकसान की जानकारी नहीं है.

53 जैविक खाद की मांग बढ़ाने के लिये क्या करना है?

अ. गांव गांव में जैविक खाद तैयार करने के लिये प्रशिक्षण देना
ब. दूरदर्शन, चैनलों, इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाओं में जैविक खाद की जानकारी सरल हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में देना
स. जैविक खाद तथा रासायनिक खाद की तुलना करना
द. जैविक खाद के उत्पादों को मंहगे मूल्य पर खरीदना

54 विदेशों में जैविक खाद से तैयार अनाज, फल, जड़ी बूटियों, चाय की मांग अधिक क्यों है?

अ. रासायनिक खाद के नुकसान से भयभीत हैं.
ब. जैविक खाद के लाभों से भली भांति परिचित हैं.
स. जैविक खाद से तैयार वस्तुएं विदेशों में उपलब्ध नहीं हैं.
द. विदेशों में रासायनिक खाद पर अधिक जोर दिया गया था.

जैविक कृषि पंचाग

55 उत्तम खेती के लिये जैविक कृषि पंचाग की क्या आवश्यकता है?

अ. जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिये.
ब. जैविक खेती को सुव्यवस्थित ढंग से करने के लिये
स. चंद्रमा का प्रभाव अधिकतम प्राप्त करने के लिये

द. किसान की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिये.

56 जैविक कृषि पंचाग का प्रमुख आधार क्या है?

- अ. चंद्रमा की गति ब. सूर्य की गति
स. तारों की गति द. अंतरिक्ष की शक्ति

57 जैविक कृषि पंचाग की जानकारी भारत में बहुत कम क्यों है?

अ. पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण

ब. मेकाले की शिक्षा पद्धति के कारण

स. रासायनिक खेती के कारण

द. यंत्रीकरण के कारण

प्रस्तावना सत्युग



सत्युग में धर्म बैल के चारों पैर पर था. सत्युग में देवत्व रहने के कारण मानव की आयु बहुत ही अधिक थी. प्रकृति मानव पर पूरी तरह से प्रसन्न थी. ऋग्नि कृनि महत्वपूर्ण थी. अग्निहोत्र कृनि की जाती थी.

जैविक कृनि के कारण मानव पूरी तरह से सात्विक था. सत्युग में गोवंश का विकास देखने लायक था. कृनि का स्थान सबसे पहले था. अपार ऐश्वर्य धरती पर था.

त्रेतायुग युग



त्रेता में सूर्यवंशी भगवान श्री राम के समय में नारद संहिता के अनुसार जैविक कृनि एवं अग्निहोत्र कृनि ही की जाती थी. गोवंश का विकास चरम सीमा पर था. ऐश्वर्य अपार था इसलिए रामराज्य की प्रशंसा की जाती है.

भगवान श्री राम ने सोने के सींगों से मढ़े हुए, चंदी से मढ़े हुए खुर, दूध दोहने के पात्रों, सुंदर कीमती

वस्त्रों से अलंकृत, सोने के आभूषणों से सुसज्जित दस हजार करोड़ गोवंश का दान जैविक खेती करने के लिए ब्राहमणों को किया था.

विशाल यज्ञ अपने जीवन में भगवान श्री राम ने कई बार किये थे. त्रेता में मानव की आयु बहुत ही अधिक थी. मानव निरोगी तथा दीर्घायु था.

द्वापर युग

द्वापर युग

द्वापर युग में भी जैविक कृनि ही की जाती थी. गोवंश के उत्थान के कारण मानव सुखी तथा सम्पन्न था. द्वापर में भगवान श्रीकृ-ण के जन्म के पूर्व अपार गोवंश व्रज में मौजूद था.

दस हजार गोवंश के समूह को गोकुल कहते थे. श्रीमद भागवत के अनुसार अपार ऐश्वर्य का वर्णन मिलता है.

नंदराज का सम्मान एक करोड़ गोवंश रखने पर दिया गया था. नंदराज ने भगवान कृ-ण के जन्म के समय में बीस लाख गोवंश का दान ब्राहमणों को किया था.

पचास लाख गोवंश रखने पर वृ-भानवर का सम्मान दिया गया था. वृ-भानवर राधा जी के पिता थे.

दस लाख गोवंश रखने पर वृ-भान का सम्मान दिया गया था. 6 वृ-भान व्रज में थे.

नंद का सम्मान नौ लाख गोवंश रखने पर दिया गया था. नौ नंद व्रज में मौजूद थे.

पांच लाख गोवंश रखने पर उपनंद का सम्मान दिया गया था. नौ उपनंद मौजूद थे.

एक लाख गोवंश रखने पर गोप का सम्मान दिया गया था. एक करोड़ गोप व्रज में थे. भगवान श्रीकृ-ण के द्वारा गोवंश के विकास करने के लिए 11 साल बावन दिनों तक व्रज में गोचारण लीला की गयी थी. 125 सालों तक भगवान श्रीकृ-ण ने गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही अदभुत कार्य किया था.

श्रीमद भागवत के अनुसार सूर्य पुत्र अश्वनी कुमार के वरदान से पांडू तथा माद्री के पुत्र सहदेव के द्वारा अपने ज्योति- तथा जड़ीबूटी के ज्ञान से गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही असाधारण कार्य किया गया था. सूर्य से अश्वनी कुमारों को तथा अश्वनी कुमारों से सहदेव को ज्ञान प्राप्त हुआ था.

महाभारत के काल में सहदेव के द्वारा अपने अज्ञात समय में विराट के दरबार में युधिष्ठिर के पास

गोवंश के बारे में वर्णन करते हुए कहा था कि आठ लाख गोवंश के दस हजार वर्ग यानी आठ करोड़ गोवंश, दो लाख तथा एक लाख गोवंश के असंख्य वर्ग थे.

चालीस कोस में गोवंश के विकास की गणना नक्षत्रों की गणना से सहदेव के द्वारा की जाती थी. ऐसे उत्तम लक्षण के सांडों के बारे में उल्लेख करते हुए सहदेव ने विराट को कहा था कि बांझ महिला के द्वारा मूत्र सूंघ लेने से गर्भ धारण कर लेती है. सहदेव संहिता में गोवंश के विकास करने के बारे में बहुत ही विस्तार से बताया गया है.

श्रीमद भागवत के अनुसार कोशलदेश के राजा नग्नजीत के द्वारा गोवंश के विकास के लिए बहुत अदभुत कार्य किया गया था. नग्नजीत ने सांडों के विकास पर विशेष ध्यान दिया था. अपनी पुत्री सत्या के विवाह के पूर्व स्वयंवर में एक साथ सात सांडों को नाथने वाले युवक को विजयी माना जायेगा. ऐसी शर्त रखी गयी थी. अपनी पुत्री सत्या के विवाह भगवान श्रीकृ-ण के साथ में होने पर नौ अरब सेवक सुंदर वस्त्रों तथा आभु-णों से लदे हुए दहेज में देने का वर्णन मिलता है. दहेज में अपार हाथी, घोड़े, दासियां, गायें आदि का वर्णन किया गया है. नग्नजीत के अपार ऐश्वर्य का वर्णन श्रीमद भागवत में मिलता है.

श्रीमद भागवत के अनुसार इक्ष्वाकु के पुत्र नृग ने अपार ऐश्वर्य प्राप्त किया था. जैविक कृ-नि के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया था. नृग ने ब्राहमणों को अपार गोवंश का दान किया था.

श्रीमद भागवत के अनुसार कृ-ण के परम भक्त अम्बरी-न के पास में सातों द्वीपों का राज था. अम्बरी-न भगवान कृ-ण की भक्ति करने के लिए सभी कुछ त्याग कर लगे हुए थे. अम्बरी-न की रक्षा करने के लिए भगवान ने अपना सुदर्शन चक्र नियुक्त कर रखा था. अपार ऐश्वर्य अम्बरी-न के पास में मौजूद था. अम्बरी-न ने कई अश्वमेघ यज्ञ किये थे. ब्राहमणों को भोजन करवाकर एक साल तक मधुवन में एकादशी का व्रत रखने के बाद में अम्बरी-न ने साठ करोड़ गोवंश सुंदर वस्त्रों तथा आभु-णों से श्रंगार किये हुए जिनके सींग सोने से मढ़े हुए तथा खूर तांबे से मढ़े हुए तथा दूध दोहने के सोने के पात्रों के साथ में का दान किया था.

कलियुग

कलियुग में भी 40 साल पूर्व 5000 सालों से जैविक कृ-नि की जाती थी.

अग्निहोत्र कृ-नि



लोकप्रियता



अग्निहोत्र कृ-नि विश्व में आज किसानों के बीच में सबसे अधिक लोकप्रिय है.

आवश्यक विधि



भारत में प्राचीन समय में ऋ-नियों ने खेती करने के लिए पांच संस्कारों की आवश्यकता बताई थी.

1. भूमि संस्कार

1900 के पहले विश्व की जनसंख्या मात्र 100 करोड़ थी. 1900 के बाद में अचानक जनसंख्या विस्फोट होने के कारण ही वर्तमान में 700 करोड़ के आसपास जनसंख्या पहुंच जाने के कारण ही अधिक फसल प्राप्त करने के लिए भूमि संस्कार को पूरी तरह से समाप्त कर रासायनिक खाद एवं जहरीले 535 प्रकार के कीटनाशकों के निरन्तर प्रयोगों के कारण भूमि में सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति बहुत ही कम हो गयी है इसलिए भूमि बंजर हो गयी है. बंजर भूमि में खेती करने से उत्पन्न फसल मानव के

लिए बहुत ही अधिक नुकसानदायक है. बहुत सारी बीमारियां मानव को इन फसलों के सेवन करने के कारण हो रही है.

भूमि संस्कार की आवश्यकता क्यों है?

भारत की 36 करोड़ एकड़ भूमि के संस्कार की आज एक बार फिर से आवश्यकता है. वर्तमान में अज्ञानता के कारण ही बिना भूमि संस्कार के ही खेती की जा रही है. ऋषि पाराशर के अनुसार भूमि जीवंत होनी चाहिए. जीवंत भूमि में भरपूर सूक्ष्म जीव मौजूद रहते हैं. संस्कारित भूमि में पोषक तत्वों की पूर्ति स्वयं होने लगती है. संस्कारित भूमि में अधिक फसल मिलती है.

वटवृक्ष की मिट्टी से भूमि संस्कार

वटवृक्ष के नीचे की अथवा चीटियों के बिल से निकली 15 किलो मिट्टी एक एकड़ भूमि पर छिड़कनी चाहिए. इससे करोड़ों जीवाणु और केंचुओं का उत्पादन हो जाता है.

अमृत पानी से भूमि संस्कार

दस किलो देशी गाय के गोबर, 250 ग्राम गाय का मक्खन से तैयार किया गया घी, 500 ग्राम मधु लेकर 2 घंटे तक मिलाना चाहिए. इसे 200 लीटर पानी में घोलने से अमृत पानी बनता है. एक एकड़ भूमि अमृत पानी से संस्कारित हो जाती है.

दही की छाछ से भूमि संस्कार

चार किलो दही की छाछ को दस दिन तांबे के पात्र में रखें. रंग हरा होने पर 200 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ में छिड़के.

सींग की खाद से भूमि संस्कार

35 ग्राम सींग की खाद को तेरह लीटर पानी में आधा घंटे तक मिलाकर एक एकड़ में छिड़के.



अग्निहोत्र की भस्म से भूमि संस्कार



भारत में वर्तमान में अग्निहोत्र की भस्म से संपूर्ण खेती करने योग्य भूमि का संस्कार करना संभव है.

2. बीज संस्कार



भारत में प्राचीन समय से ही खेती करने के पूर्व बीज संस्कारित करना अनिवार्य है. वर्तमान में किसान अज्ञानता के कारण ही भारत में बीज संस्कारित नहीं करते हैं.

बीज संस्कार की आवश्यकता क्यों है?

बीज के अंदर के दोन बीज संस्कारित करने के बाद में पूरी तरह से दूर हो जाते हैं. संस्कारित बीज का अंकुरण बहुत ही अच्छा होता है. संस्कारित बीज से फसल निरोगी रहती है.

अग्निहोत्र की भस्म से बीज संस्कार

गोमूत्र तथा अग्निहोत्र की भस्म में भिगोकर बीजों को रखना चाहिए. बीज भिगने के बाद में पूरी तरह से संस्कारित हो जाते हैं.

3. जल संस्कार

जल का संस्कार करने पर जल के दो-न पूरी तरह से दूर हो जाते हैं. भारत में प्राचीन समय में जल का संस्कार किया जाता था लेकिन वर्तमान समय में जल का संस्कार नहीं किया जाता है. जल में मौजूद रसायनों के कारण बहुत ही अधिक जहरीला है. जल संस्कार नहीं करने के कारण उत्पन्न फसल बीमार उत्पन्न हो रही है.

जल संस्कार की आवश्यकता क्यों है?

वर्तमान में जल का संस्कार भारत में अमृत पानी से किया जाता है. सिंचाई किए जाने वाले जल में अग्निहोत्र की भस्म मिलाकर संस्कारित करना आवश्यक है.

3. वायु संस्कार



100 सालों में 24 लाख टन ओक्सीजन वातावरण में कम हो गयी है. वायु में ओक्सीजन की कमी बहुत ही अधिक हो गयी है तथा वायु में प्रदू-ण भी बहुत ही अधिक हो गया है इसलिए वायु संस्कार की आवश्यकता है. वर्तमान में वायु संस्कार के बिना ही भारत में खेती की जा रही है. जहरीली वायु में की गयी खेती मानव के स्वास्थ्य के लिए प्राणघातक है.

वायु संस्कार की आवश्यकता क्यों है?



खेती करने की भूमि के केंद्र में एक कुटिया 12 गुना 16 फुट की तैयार कर वायु संस्कार पूरी तरह से अग्निहोत्र से ही करना संभव है.



20 एकड़ से अधिक भूमि में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं केंद्र में कुटिया तैयार कर सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय में अग्निहोत्र करने की आवश्यकता है.

महामृत्युंजय यज्ञ



महामृत्युंजय यज्ञ प्रतिदिन 2 से 4 घंटे खेत में कम से कम करने की आवश्यकता है. आवश्यकता पढ़ने पर 6 से 12 घंटे तक महामृत्युंजय यज्ञ करना है.



हर अमावस्या को 24 घंटे का महामृत्युंजय यज्ञ करना है. खेत में वायु संस्कार हो जाता है.

परख



अग्निहोत्र प्राण उर्जा का विज्ञान आधुनिक विज्ञान, पैथालोजी, सायकोथेरेपी, रेडिएस्थेशिया, किरलियन फोटोग्राफी, बाडी इलेक्ट्रीसिटी, आदि आदि के द्वारा परखा गया है.

प्रक्रिया



ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय देशी गोवंश के गोबर के कंडे, अक्षत, दो बूंद देशी गाय के घी से पात्र का आकार उपरी 14.5 गुणित 14.5 सेमी तथा नीचे का तला 5.25 गुणित 5.25 सेमी उंचाई 6.5 सेमी का तांबे के पिरामिड आकार के अग्निपात्र में वेदिक मंत्रों सूर्योदय के समय में सूर्य मंत्र तथा सूर्यास्त के समय में अग्नि मंत्र के साथ में करने की पूरी प्रक्रिया विश्व के सभी देशों में बहुत ही जिज्ञासा का वि-नय थी.

सूर्य उदय



सूर्य की तरंगें जब पृथ्वी पर सबसे पहले पहुंचती हैं तब उदय होता है. सूर्य के उदय के समय में सूर्य की तरंगें अलग अलग गैसों में अनन्त उर्जा के साथ में प्रवेश करती हैं तब गैसों में से विद्युत चुम्बकीय तरंगें, इथर, अग्नि, सूक्ष्म तरंगें धरती की ओर प्रवाहित होती हैं. वायुमंडल में बहुत तेजी से परिवर्तन होता है. मानव सूर्योदय के समय दोनों नाक से सांस ग्रहण करता है.

सूर्य अस्त

जिस स्थान पर सूर्य की किरणें अंतिम लुप्त होती हैं उसे अस्त कहते हैं.

आवश्यक सामग्री

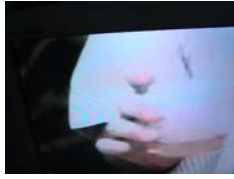


एक बार अग्निहोत्र करने के लिए दो बूंद गाय का घी, 10 से 15 अक्षत, एक गोबर का कंडा चाहिए. अक्षत विश्व में सभी जगह उपलब्ध है. 1 बार अग्निहोत्र करने के लिए मात्र 1.5 रु. खर्च आता है.

5. वनस्पति संस्कार

वर्तमान समय में भारत के किसानों के द्वारा वनस्पति संस्कार नहीं किया जाता है जिसके कारण फसल में 33000 प्रकार की बीमारियां उत्पन्न होती हैं तथा बीमारियों के रोकने के लिए 535 प्रकार के जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग आवश्यकता से अधिक किया जाता है.

वनस्पति संस्कार की आवश्यकता क्यों है?



अपनी फसल को पूरी तरह से निरोगी रखने तथा अधिक उत्पादन लेने के लिए रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए.

छाछ

तांबे के पात्र में रखी हुई गाय की खट्टी छाछ का पानी के साथ में छिड़काव करने की परम्परा है.

मटका खाद

यूरिया के बदले में 15 किलो ताजा गोबर, 15 किलोग्राम ताजा देशी गाय का गोमूत्र, आधा किलो गुड़ और 15 किलो जल मिट्टी के घड़े में मिलाकर रखें. घड़े का मुँह कपड़ मिट्टी से पैक कर दें. पांच दिन बाद इस घोल में 200 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ भूमि पर छिड़काव करने की परम्परा बन रही है. यह मटका खाद है.

मधुमक्खी पालन

अखाद्य खली, हडडी का चूरा, समुद्र का फेन, राख, जंगल की खरपतवार तथा मधुमक्खी पालन भी फसल की पैदावार बढ़ाते हैं.

गोमूत्र

5 लीटर देशी गाय के मूत्र और 1 लीटर नीम का तेल मिलाकर 100 लीटर जल में मिलाकर एक एकड़ भूमि पर छिड़काव करने की वर्तमान में परम्परा है. अग्निहोत्र की भस्म से वनस्पति संस्कार करने की आवश्यकता है.

पाठ्यक्रम



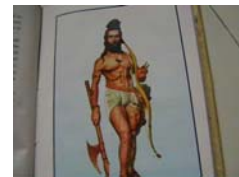
विश्व के बहुत सारे देशों में बच्चों को भी अग्निहोत्र के बारे में पाठ्यक्रम में भी बताया जाता है.

128 देश



128 देशों के द्वारा भारत से अग्निहोत्र कृनि को पूरी तरह से समझ कर तथा अग्निमंदिर एवं अग्निहोत्र नगर कई एकड़ में विकसित कर किसानों के द्वारा अग्निहोत्र कृनि की जा रही है.

भगवान श्री परशुराम जी



आठ लोग धरती पर अमर हुए हैं उनमें महाबली श्री हनुमान जी, श्री अश्वथामा जी, श्री विभी-नण जी, पाताल के निवासी श्री बलि राजा, श्री कृपाचार्य जी, मार्कंड ऋनि जी, वेद व्यास जी तथा भगवान परशुराम जी.

अमरत्व



भगवान श्री परशुराम जी के द्वारा अग्निहोत्र जो समय के साथ में धरती पर से अदृश्य हो गया था उसे फिर से धरती पर प्रगट करने के लिए अमरत्व मिला था. अग्निहोत्र सर्वदाता है.



अग्निहोत्र भगवान परशुराम जी का परशु है.

आज्ञा

1944 विजयादशमी के दिन श्री गजानन महाराज श्रीजी शिवपुरी अक्कलकोट जिला सोलापुर महारा-द्र को विश्व में अग्निहोत्र कृनि करवाने की आज्ञा दी गयी है.

वेदविज्ञान अनुसंधान संस्था



श्रीजी के द्वारा शिवपुरी में अग्निहोत्र नगर बसाकर अग्निहोत्र कृनि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.



वर्तमान में श्री श्याम जी झाड़ू के द्वारा वेदविज्ञान अनुसंधान संस्था शिवपुरी अक्कलकोट जिला सोलापुर महारा-द्र दूरभा-न 02181-220708 में 40

गोवंश जिसमें वर्णसंकर भी शामिल हैं को रखकर विशाल भूमि पर अग्निहोत्र कृनि का कार्य किया जा रहा है.

मलेशिया को कंडे निर्यात



विश्व को अग्निहोत्र कृनि करने के लिए वेद विज्ञान अनुसंधान संस्था के द्वारा 2 लाख गोमय के कंडे निर्यात किए जा रहे हैं.

साहित्य

अग्निहोत्र कृनि करवाने के लिए साहित्य का प्रकाशन किया गया है.

वीडियो सीडी

300 रु. मूल्य पर अग्निहोत्र पर वेद विज्ञान अनुसंधान संस्था के द्वारा वीडियो सीडी भी तैयार की गयी है.

वार्निक सम्मेलन



25 से 27 दिसम्बर हर साल भारी संख्या में किसान अग्निहोत्र खेती के अपने अनुभव सभी किसानों को बताने के लिए वेद विज्ञान अनुसंधान संस्था में आते हैं तथा 3 दिन बहुत ही उत्साह के साथ में वार्निक सम्मेलन में भाग लेते हैं.

माधव जी पोतदार



श्रीजी के द्वारा 1954 में श्री माधव जी पोतदार माधव आश्रम सिहोर मार्ग बैरागढ़ भोपाल मध्यप्रदेश 462035 को अग्निहोत्र कृनि करने के लिए संकल्प दिलवाया गया था.

जयंती



22 फरवरी 1963 महाशिवरात्रि को पूरे विश्व में अग्निहोत्र कृनि को पहुंचाने का कार्य श्री माधव जी पोतदार के द्वारा उनकी पुत्री तथा माधव आश्रम की वर्तमान में संचालिका सुश्री नलिनी माधव जी के द्वारा प्रारम्भ करवाया था.

प्रचार प्रारम्भ



15 फरवरी 1968 से अग्निहोत्र कृनि का कार्य का प्रचार माधव आश्रम से प्रारम्भ हो गया था.

प्रचारक सभा



27 एवं 28 दिसम्बर को हर साल प्रचारक सभा का आयोजन 35 सालों से किया जाता है. सभी प्रचारक मिलकर सामुहिक अग्निहोत्र करते हैं. अग्निहोत्र कृनि करने वाले सभी किसान पूरे भारत में से भाग लेते हैं तथा अनाज, सब्जी, फल उत्पन्न करने के लिए अग्निहोत्र कृनि के अपने अनुभव को विस्तार से बतलाते हैं.

धर्मसूर्य

1 जुलाई 1972 से माधव आश्रम के द्वारा अग्निहोत्र कृनि को पूरे विश्व में किसानों को पहुंचाने के लिए धर्मसूर्य त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था. धर्मसूर्य पूरे विश्व में वर्तमान में पढ़ा जाता है.

आधुनिक कृनि और यज्ञ



माधव आश्रम के द्वारा 1974 से अग्निहोत्र कृनि का कार्य प्रयोग के तौर पर प्रारम्भ किया गया था. अपने अनुभवों के आधार पर मई 1974 में आधुनिक कृनि और यज्ञ लेख धर्मसूर्य में प्रकाशित किया गया था. धर्मसूर्य में लेख प्रकाशित होने के बाद में पूरे विश्व में अग्निहोत्र कृनि का प्रचार प्रारम्भ हो गया था.

अग्निहोत्र



अगस्त 1981 को 5000 प्रतियों के साथ में प्रथम संस्करण अग्निहोत्र पुस्तक का प्रकाशन 48 पन्नों में किया गया था तथा किसानों की बहुत अधिक मांग के कारण ही सत्रह संस्करण 12 मार्च 2002 तक प्रकाशित

किए गये थे जिसमें अग्निहोत्र कृनि के बारे में बहुत ही अच्छी जानकारी दी गयी है.

अग्निहोत्र चिकित्सा



मई 1988 में अग्निहोत्र चिकित्सा पुस्तक का प्रथम संस्करण 5000 प्रतियों के साथ में प्रकाशित किया गया था. 30 अप्रैल 1998 तक 9 संस्करण प्रकाशित किये गये थे.

अग्निहोत्र कृनि क्रांति

जून 1999 में माधव आश्रम के द्वारा भारत में मौजूद 65 करोड़ किसानों के लिए अलग अलग फसलों गेहूं, चावल, बाजरा, जवारी, मक्का, मूंगफली, सोयाबीन, सभी सब्जियां, सभी फलों, सभी मसालों पर अग्निहोत्र कृनि करवाने के लिए अग्निहोत्र कृनि क्रांति पुस्तक सहयोग राशि 25 रु. का प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया गया था. अग्निहोत्र कृनि क्रांति पुस्तक किसानों में बहुत ही अधिक लोकप्रिय है.

वीडियो सीडी

माधव आश्रम के द्वारा अग्निहोत्र कृनि के बारे में कृनि वैज्ञानिक डा. रामाश्रय मिश्रा जी अग्निहोत्र कृनि वैज्ञानिक कानपुर उत्तरप्रदेश के द्वारा किसानों को विस्तार से समझाने के लिए 45 मिनट की वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

अग्निहोत्र कृनि शिविर



4 से 6 अप्रैल 1982 को पहली बार अग्निहोत्र कृनि का शिविर आयोजन किया गया था. उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश के किसानों ने उसमें बहुत ही उत्साह के साथ में भाग लिया था. श्रीमती अंजली पाठक जी लखनउ ने अग्निहोत्र कृनि करने के लिए श्री प्रकाश सिंह रघुवंशी जैसे जागरूक एवं उर्जावान किसानों के माध्यम से पूरे भारत के 25 लाख किसानों के बीच में जागृति उत्पन्न की है. महारा-द्र में सांगली एवं अहमदनगर के किसानों ने साल में 2 बार श्री प्रकाश सिंह जी जिन्हें प्यार से बाबाजी कहते हैं को आमंत्रित कर उनसे प्रेरणा ली है.

जर्मनी

1974 से ही भारत से अग्निहोत्र को पूरी तरह से समझकर अग्निहोत्र पर बहुत ही गहराई से अनुसंधान कर विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर चुका है. पश्चिमी जर्मनी बोडेन्सी संभाग की फार्मास्यूटिकल्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की प्रमुख श्रीमती मोनिका येले तथा उनके पति श्री बर्थोल्ड येले के द्वारा लगातार अनुसंधान करने के बाद में महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे. जर्मनी ने अग्निहोत्र के लिए बहुत अधिक खर्च किया है. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लगातार प्रयोगों के कारण स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव के कारण ही जर्मनी बहुत अधिक परेशान था. अग्निहोत्र की भस्म का दवा के रूप में प्रयोग भी जर्मनी ने ही विश्व को बताया था. अग्निहोत्र करने की पूरी प्रक्रिया को भी जर्मनी ने सबसे पहले पूरी तरह से समझने का प्रयत्न किया था. अग्निहोत्र की प्रदू-णरोधी क्षमता का अध्ययन कर विश्व के सामने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये. अग्निहोत्र की भस्म का वैज्ञानिक परीक्षण कर अग्निहोत्र भस्म के रोगप्रतिरोधक गुणों को विश्व को बताया था. सबसे पहले जर्मनी ने अग्निहोत्र के गुणों को अच्छी तरह से परखा था. अग्निहोत्र कृनि अग्निहोत्र की

भस्म से ही की जाती है इसलिए अग्निहोत्र कृनि करने के लिए जर्मनी ने वैज्ञानिक आधार तैयार किया था.

उत्तरी अमेरिका

होमा



अग्निहोत्र अमेरिका में होमा के नाम से बहुत ही प्रसिद्ध है. सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय में पिरामिड आकार के तांबे के अग्निपात्र के चमत्कार से अमेरिका बहुत ही अधिक प्रभावित है.

1973

श्री माधव जी पोतदार के द्वारा श्री वसंतराव परांजपे जी के द्वारा 1973 को उत्तरी अमेरिका में अग्निहोत्र कृनि के प्रचार करवाने के लिए भारत से साधनहीन अवस्था में भेजा गया था. उत्तरी अमेरिका के द्वारा गोवंश पालन पर बहुत ही गंभीरता के साथ कार्य किया गया है.

अक्टूबर 1980

अमेरिका में अक्टूबर 1980 से अग्निहोत्र कृनि का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 17 एकड़ भूमि पर अग्निहोत्र कृनि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.

सेम

सेम की फसल पर अग्निहोत्र कृनि का प्रयोग सबसे पहले किया गया था. श्रीमती जेरी होजेस के द्वारा प्रयोग करने के बाद में पाया गया कि 12 गुना 16 फुट की कुटिया में 4 घंटे अग्निहोत्र हवन करने के बाद में 1989-90 में प्रति 100 वर्गफुट भूमि पर सेम की फसल 43.75 पाउंड हुई थी.

रासायनिक खाद की तुलना में वृद्धि

रासायनिक खाद की तुलना में अग्निहोत्र कृनि करने पर 961 प्रतिशत वृद्धि हुई थी. अमेरिका में अग्निहोत्र कृनि पर अनुसंधान करने के लिए हर साल बहुत ही अधिक धन खर्च किया जाता है.

अग्निहोत्र विश्वविद्यालय



अमेरिका में अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने के लिए अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है. अमेरिका में 4 घंटे महामृत्युंजय यज्ञ हर दिन किया जाता है.

375 अरब टन खाद्य सामग्री



अमेरिका में 375 अरब टन खाद्य सामग्री जो विश्व के 700 करोड़ मानवों के द्वारा हर साल खायी जाती है उसके प्रदू-ण मुक्त करने की चिंता बनी हुई है. अमेरिका में बसे 80 प्रतिशत भारतीय अग्निहोत्र करने के लिए ज्यादा उत्सुक हैं.

72 करोड़ एकड़ भूमि बरबाद



अमेरिका में 72 करोड़ एकड़ भूमि रासायनिक खाद के बहुत अधिक प्रयोग करने के कारण पूरी तरह

से बरबाद हो गयी है. अमेरिका अब पूरी तरह से जागरुक होकर अग्निहोत्र कृनि के लिए प्रयत्न कर रहा है.

दक्षिण अमेरिका



दक्षिण अमेरिका यानी ब्राजील विश्व में अग्निहोत्र करने के लिए सबसे अधिक जागरुक है. अग्निहोत्र कृनि के लिए ब्राजील सबसे आगे है. भारत से 6 गुना अधिक भूमि पर ब्राजील कृनि करता है. ब्राजील की जनसंख्या भारत से एक छठी होने के कारण कृनि के साथ साथ गोपालन बहुत ही अच्छा है. भारत से गीर गोवंश ले जाकर 60 लाख गीर गोवंश विकसित कर चुका है. 10 लाख अंगोल नस्ल विकसित कर चुका है. ब्राजील में साहीवाल, लाल सीधी, खिल्लारी जैसी नस्लें विकसित की गयी हैं.

इंदौर विधि

इंदौर विधि सर्वप्रथम 1931 में अलबर्ट हावर्ड और यशवंत बाड ने इंदौर में विकसित की थी. इस समय रुस के पास 1708 मिलियन में से मात्र 126 मिलियन हेक्टेयर भूमि ही उपजाउ है. बाकी बंजर या बर्फीली है. चीन के पास 960 मिलियन हेक्टेयर में से 124 मिलियन हेक्टेयर, अमेरिका 9,50,000 हेक्टेयर में खेती करके चौथे है. अमेरिका 0.23 प्रतिशत ही जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अमेरिका के पास में 936 मिलियन हेक्टेयर में से 177 मिलियन हेक्टेयर, ब्राजील के पास में 851 मिलियन हेक्टेयर में से 53 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ जमीन है.

जैविक देश

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है. आस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टेयर में जैविक खेती कर विश्व में आज प्रथम है. ओस्ट्रेलिया अपनी कुल भूमि का मात्र 2.31 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अर्जेन्टीना 3192000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके दूसरे है. अर्जेन्टीना मात्र 1.89 प्रतिशत

जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. इटली 1230000 हेक्टेयर में खेती करके तीसरे है. इटली 7.94 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. ब्रिटेन 479631 हेक्टेयर में खेती करके पांचवे है. ब्रिटेन 3.96 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. उरुग्वे 678481 हेक्टेयर में खेती करके छठवे है. उरुग्वे 4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. जर्मनी 632165 हेक्टेयर में खेती करके सातवे है. जर्मनी 3.7 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. स्पेन 485079 हेक्टेयर में खेती करके आठवे है. स्पेन 1.66 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. कनाडा 430600 हेक्टेयर में खेती करके नवें है. कनाडा 0.58 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. फ्रांस 419750 हेक्टेयर में खेती करके दसवें है. फ्रांस 1.4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा का आयोजन जैविक खेती को हर गांव में प्रारम्भ करने के लिए विचारों का महायुद्ध के समान है. 5 लाख गांवों में 10 लाख किलोमीटर की यात्रा की जायेगी. 108 दिनों में मुख्य यात्रा 20,000 किलोमीटर की होगी. 15000 उपयात्राएं महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी. जैविक खेती के बारे में हर गांव में शोभा यात्रा के समय में बहुत ही विस्तार से बताया जायेगा. 1950 के दशक में हमारी भूमि उपजाउ थी. 1972 में हरित क्रांति करने के लिए रासायनिक खाद का प्रयोग किया गया था. 1980 में हमारी भूमि का उपजाउपन कम हो गया था.

भारत

भारत 41,000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके 11 वें है. भारत में 2015 में सिक्किम पहला जैविक राज्य बन जायेगा.

जैविक बोर्ड

सिक्किम में 2003 में जैविक बोर्ड की स्थापना की गयी है. 62,000 किसान जैविक खेती करने के लिए संकल्पित हैं.

रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर 50,000 हेक्टेयर भूमि में जैविक कृनि की जायेगी. भारत के पास में 328 मिलियन हेक्टेयर में से 190 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ है.

अनुमान के अनुसार भारत एक हेक्टेयर में 60 क्विंटल अनाज उत्पन्न करता है तो 1940 क्विंटल अनाज उत्पन्न कर सकता है.

वर्तमान में 30,000 लाख टन कार्बनिक कचरे की समस्या हर साल भारत में उत्पन्न हो जाती है. पानी की समस्या के कारण भारत सरकार पहले से बहुत अधिक परेशान है. इंदौर विधि में तैयार खाद में रासायनिक खाद की तुलना में पानी की बचत 6 गुना होती है. इंदौर विधि से तैयार खाद से तैयार फसल की मीठास बहुत अधिक होती है. भारत सरकार खेती के कचरे का समाधान नहीं कर पाती है. खेती के कचरे का उपयोग इंदौर विधि में करने के कारण खेती के कचरे की समस्या का समाधान करना संभव है. गोवंश के गोबर और गोमूत्र का उपयोग करने के कारण गोपालन को बढ़ावा मिलेगा.

भारत में मात्र 50 प्रतिशत खेती के कचरे का उपयोग करने पर 103 करोड़ की बचत करना संभव है. किसान को इंदौर विधि से पर्यावरण संतुलन के होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से बताने की आवश्यकता है. इंदौर विधि के बारे में वीडियो सीडी के द्वारा बहुत ही सरल तरीके से उसकी बोलचाल में किसान को पूरी तरह से समझाने की आवश्यकता है. 84 देशों में कार्य करने वाली अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा इंदौर विधि पर कार्य करने की आवश्यकता है. गायत्री परिवार के सबसे अधिक समर्पित कार्यकर्ता मौजूद हैं. 23 अप्रैल 1935 को महात्मा गांधी इंदौर विधि की जानकारी लेने आये थे. इंदौर विधि पर भारतीय किसान संगठन के द्वारा अधिक कार्य नहीं किया गया है.

रासायनिक खाद पर हरित क्रांति के नाम पर बढ़ावा देने के कारण इंदौर विधि की उपेक्षा की गयी थी. जैविक खाद के लिये उत्पन्न जागृति ने किसान का ध्यान एक बार फिर से इंदौर विधि की ओर खींचा है. श्री श्याम बिहारी गुप्त जी जैसे जैविक खेती के जानकार प्रोफेसर ने मराठा किसानों को आत्महत्या करने से रोकने के लिये इंदौर विधि की ओर किसानों को मोड़ा है. वर्तमान में इंदौर विधि रासायनिक खाद की तुलना में बहुत अधिक पिछड़ी हुई होने के कारण किसानों में खेती करने के लिये बहुत ज्यादा लोकप्रिय नहीं है.

इंदौर विधि में उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान देने की आवश्यकता है. इस विधि पर गहन अनुसंधान करने की आवश्यकता है. इस पद्धति से कंपोस्ट कम से कम 9 इंच लम्बा 5 इंच चौड़ा 3 इंच गहरा व अधिक से अधिक 20 इंच लम्बा 5 इंच चौड़ा 3 इंच गहरा गडढा तैयार कर बनाया जाता है. इस गडढे को 3 से 6 भागों में बांट दिया जाता है. प्रत्येक हिस्से का आकार 3 इंच 5 इंच 3 इंच से कम नहीं होना चाहिये. प्रत्येक हिस्सा अलग अलग भरा जावे. अंतिम हिस्सा खाद पलटने के लिये खाली छोड़ा जावे.

खाद बनाने की सामग्री

विभिन्न फसलों के अवशेष, खेत से निकाले गये खरपतवार, गन्ने की पत्तियां, घांस, लकड़ी की राख, भूसा, डंठल, टहनियां आदि को बारीक टुकड़ों में कुटटी कर लें. गोवंश का गोबर, मूत्र उसमें मिला दें. गोबर के कंडे की राख अम्लीयता घटाती है और पोटाश की मात्रा बढ़ाती है.

भराई

गडढे के प्रत्येक भाग में कचरा अलग अलग परतों में भरा जाये.

पहली परत

सर्वप्रथम गडढे को 3 इंच मोटी तह कचरे और राख से भर दें. गोमूत्र भी उस पर फैला दें.

दूसरी परत

2 इंच गोबर और गोमूत्र मिटटी के साथ बिछायें. मिटटी को पानी से गिला कर दें. इस प्रकार एक थर बनता है. 8 से 10 थर भरे जावें. सुबह शाम पानी छिडका जाता है जिससे नमी बनी रहे.

कंपोस्ट को पलटना

धीरे धीरे यह ढेर दबकर जमीन की सतह के बराबर आ जाता है. 15 दिन के बाद अंतिम भाग में

उससे पूर्व भरे गये हिस्से का कचरा पूर्णतः पलट दें. पलटने की इस क्रिया को उपर का कचरा नीचे, नीचे का कचरा उपर, मध्य का कचरा किनारे पर एवं किनारे का कचरा मध्य में करके अच्छी तरह से पानी डाला जावे. कचरे को पलटने के बाद उसे पुनः गीली मिट्टी से ढंक दें. इसी प्रकार प्रत्येक भाग का कचरा पलटा जावे. इस तरह 2 से 3 बार 15 दिनों के अंतर से पलटने की क्रिया करने पर 2 माह बाद अंतिम पलटाई करें. एक माह बाद अच्छी तरह से पक जाता है. यह खाद काले रंग का मिट्टी जैसी गंध वाला होता है.

गांवों में जो परम्परागत खाद के गडढे होते हैं उन्ही का ठीक प्रकार से नियोजन इंदौर पद्धति के आधार पर किया जा सकता है. इंदौर पद्धति में जमीन के उपर ढेर बनाकर भी खाद बनाई जा सकती है. झारखंड में श्री पुरु-नोत्तम जी झुनझुनवाला कलकत्ता पिनरापोल सोसायटी चाकुलिया इंदौर विधि को विकसित करने के लिए 1000 किसानों को प्रशिक्षण देते हैं. खादी ग्रामोद्योग के सहयोग से प्रशिक्षण दिया जाता है. 65 एकड़ में 314 गोवंश के साथ में 1916 से कार्य चल रहा है. झारखंड की अन्य गोशालाओं में भी इंदौर विधि को पूरी तरह से विकसित किया जायेगा.

छत्तीसगढ़ राज्य में गायत्री परिवार के खेती के स्नातक युवा श्री साहू जी 12 लाख लगाकर कसारडीह दुर्ग एवं अंडा में बड़े स्तर पर इंदौर विधि से खाद तैयार कर रहे हैं. कृषि के स्नातक प्रशिक्षण लेने हर साल आते हैं. श्री साहू जी किसानों को उचित मूल्य पर इंदौर विधि खाद उपलब्ध करवा रहे हैं. छत्तीसगढ़ राज्य के किसानों को कम से कम एक बार श्री साहू जी के कार्य को देखने अवश्य ही जाना चाहिये. श्री साहू जी के द्वारा किसानों को निःशुल्क प्रशिक्षण भी दिया जाता है. इंदौर विधि खाद बनाने का प्रशिक्षण लेने के लिये आप इंदौर में गोशालाओं, गायत्री परिवार, कस्तुरबा ग्राम, मध्यप्रदेश सरकार के जैविक खेती विभाग, गांवों में सम्पर्क कर सकते हैं.

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण अखिल विश्व कामधेनु परिवार हर गांव में किसानों तथा गांवों के गोपालकों को देने के लिए तैयारियां कर रही है. प्रशिक्षण ओवरहेड प्रोजेक्टर पर

दिखाया जायेगा. साहित्य भी वितरित किया जायेगा. प्रशिक्षण की अवधि, प्रशिक्षण ग्रहण करने वाले को तथा पढ़ाने वाले को आवास एवं भोजन तथा नाश्ते की सुविधा दी जायेगी.

बिक्री

जैविक खाद की नगद बिक्री करने के लिए भी हर गांव में जैविक दुकानों की अच्छी व्यवस्था अखिल विश्व कामधेनु परिवार के द्वारा की जायेगी.

प्रकाशन

जैविक खेती पर अनेकों भा-गाओं में प्रकाशन तथा वीडियो डीवीडी सीडी वेबसाइट, प्रतियोगिता, चित्र प्रदर्शनी, कैलेंडर उपलब्ध हैं.

वित्तीय सहयोग

किसानों को नगद वित्तीय सहयोग वर्तमान में जैविक खेती करने के लिए बहुत सारी संस्थाएँ दे रही हैं.

सींग खाद

प्रस्तावना

वर्तमान में सींग खाद किसानों को खेती करने के लिये आसानी से उपलब्ध नहीं है इसलिये किसानों को सींग खाद का अनुभव नहीं है. सींग खाद बनाना सभी किसान नहीं जानते हैं. सींग खाद आसानी से सस्ते में सभी किसानों को उपलब्ध करवाने के लिये संगठित गंभीर प्रयत्न करने की आवश्यकता है. सींग खाद साल में एक ही दिन बनाया जाता है. विश्व के 84 देशों में सक्रिय अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा रासायनिक खाद के बदले किसानों को महत्व समझाने के लिये सींग खाद पर तुरन्त ही कार्य करने की आवश्यकता है.

युग निर्माण योजना तपोभूमि मथुरा के द्वारा प्रकाशित पुस्तक मूल्य 15 रु जयति जय गोमाता पुस्तक

में सींग खाद के बारे में बहुत ही सरल तरीके से समझाया गया है. जयति जय गोमाता पुस्तक की लाखों प्रतियों का प्रकाशन किया गया है लेकिन सभी को वितरित होने के बाद लोगों ने ठीक से पढ़ा नहीं है. गोवंश उर्जा एवं कृषि विकास मूल्य 60 रुपये में सींग खाद के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी है. सींग खाद विश्व के अनेक देशों में तैयार किया जा रहा है. सींग खाद पर केंचुआ खाद संदर्शिका की तरह ही अलग से पुस्तक की आवश्यकता है. सर्व सेवा संघ राजघाट वाराणसी के द्वारा प्रकाशित पुस्तक किसान मित्र में भी सींग खाद के बारे में समझाया गया है.

किसान मित्र पुस्तक का वितरण बहुत कम किसानों तक हुआ है. वर्तमान में सींग खाद किसानों में बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं है. सींग खाद साल में सिर्फ एक ही दिन बनाया जाता है. भारत के 5 लाख 76 हजार गांवों में एक ही दिन सींग खाद तैयार करने के लिये पूर्व तैयारी की आवश्यकता है. सींग खाद बड़ी मात्रा में तैयार करने के लिये अधिक से अधिक प्रशिक्षित कार्यकर्ता पूरे भारत में एक साथ चाहिये.

सींग खाद को तैयार करने में बहुत अधिक समय लगता है. सींग खाद जमीन के अंदर ही तैयार की जाती है जिससे किसान को इसके बारे में समझने का मौका नहीं मिलता है. रासायनिक खाद की तुलना में सींग खाद की चर्चा नगण्य है. भारत में गिने चुने किसानों ने सींग खाद के प्रयोग किये हैं. सींग खाद लोकप्रिय नहीं होने का कारण सींग का आसानी से नहीं मिलना है. सींग खाद आसानी से देखने नहीं मिलती है.

सींग बैंक

भारत में विश्व का सबसे अधिक गोवंश मौजूद है. लंबे सींगों के कारण भारत के 7000 साल प्राचीन गोवंश अंकोल तथा अंकोलवाटसी विश्व में प्रसिद्ध हैं. वर्तमान में अमेरिका अंकोल और अंकोलवाटसी को सुरक्षित रख रहा है. भारत के लंबे सींग के गोवंश आफ्रीका में आदिवासियों के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में पाले जाते हैं. प्राचीन समय से भारत में गोपालन करने की परम्परा है. भारत में बहुत अच्छे सींग वाले गोवंश मौजूद हैं. कांकरेज के सींग देखने लायक होते हैं.

गीर गोवंश के सींग बहुत सुंदर होते हैं. गीर गोवंश ब्राजील की तरह साठ लाख फिर से तैयार करने हैं. अंगोल गोवंश के सींग बहुत सुंदर होते हैं. गोवंश की सुंदरता उसके सींग के कारण होती है. गोवंश के सींग समय के साथ बढ़ते हैं. दक्षिण भारत में गोवंश के सींग लंबे होते हैं. खिल्लार नस्ल के सींग धनु-नाकार के लंबे हैं. प्राकृतिक स्तर पर भारत में बहुत बड़ी मात्रा में गोवंश की मौत होती है. गोवंश की प्राकृतिक मौत हो जाने पर भारत में गांव में सींग बैंक के अभाव में सींग फेक दिया जाता है. सींग खाद तैयार करने के लिये सींग एकत्र करने की आवश्यकता है.

भारत में सींग एकत्र करने के लिये सींग बैंक की तुरन्त ही आवश्यकता है. सींग बैंक में सींग के जानकार की आवश्यकता है. साल भर गोपालकों से सींग एकत्र कर सुरक्षित रखने के लिये सींग बैंक की भूमिका महत्वपूर्ण है. सींग खाद के लिये अधिक दूध देने वाली गाय या बैल के सींग की आवश्यकता होती है. सींग के चयन करने के लिये बहुत सावधानी की आवश्यकता है. जितना बड़ा सींग होगा उतना अधिक सींग खाद तैयार होगा. सींग का व्यास जितना अधिक होगा उतना अधिक गोबर उसमें आ सकेगा. गाय की तुलना में बैल का सींग अधिक बड़ा होता है. सींग बैंक में प्रारम्भ के समय में कम से कम 600 बढ़िया सींग अवश्य ही होने चाहिये.

सींग बैंक के द्वारा सींग खाद तैयार करने के लिये किसानों को सींग आसानी से सस्ते में उपलब्ध करवाने की आवश्यकता है. सींग बैंक किसानों के द्वारा स्वयं सहायता समूह के द्वारा संचालित की जानी चाहिये. सींग बैंक की हर गांव में सहायक शाखा होना आवश्यक है. सींग बैंक की सहायक शाखा में सींग के जानकार के द्वारा सींग एकत्र करने की सुविधा तथा सींग साल भर रखने की जगह होनी चाहिये. गांव में गोवंश के मर जाने पर सींग के एकत्र करने के लिये सींग के जानकार व्यक्ति का सूचना मिलने पर बैंक से तुरन्त ही जाने की आवश्यकता है.

सींग बैंक में गोपालकों के द्वारा मरी हुई गाय या बैल के सींग जमा करने पर नगद भुगतान तुरन्त ही

होना चाहिये. सींग खाद को किसानों में लोकप्रिय बनाने के लिये किसी ने वैज्ञानिक प्रयास नहीं किया है. सींग खाद सभी जैविक खादों में सबसे ज्यादा अच्छी है. बहुत ही कम लागत में बहुत ही आसानी से सींग खाद तैयार हो जाती है. अधिक दूध देने वाली गाय या उसके पुत्र बैल के सींग तथा अधिक दूध देने वाली गाय या उसके पुत्र बैल के गोबर की आवश्यकता होती है जो भारत में बहुत ही आसानी से मिल जाता है. गाय या बैल के मरने पर सींग को संभाल कर रखने की आवश्यकता है.

वर्तमान में सींग खाद की लोकप्रियता भारत में किसानों में खेती करने के लिये बहुत कम लोकप्रिय है इसलिये सींग को फेक दिया जाता है. जैवगति के प्रणेता रुडोल्फ स्टेनर के अनुसार गाय का गोबर नक्षत्रीय एवं आकाशीय प्रभावों से युक्त होता है. आकाशीय प्रभाव के कारण आक्सीजन बढ़ती है. इन्ही ताकतों के कारण गोबर के अंदर अकार्बनिक तत्वों को आत्मसात करने की क्षमता विकसित होती है. गोबर के अंदर जीवों को आकर्षित करने की ताकत है. अधपके गोबर को ध्यान से देखने पर उसमें उपस्थित जीवों से इसे समझा जा सकता है. गाय के चार पेट वाला पाचन संस्थान का इसमें बहुत योग है. गाय माता का गोबर नक्षत्रीय प्रभावों के कारण नाइट्रोजन बढ़ाने वाली ताकतों से युक्त है.

नक्षत्रीय प्रभाव के कारण गाय माता के गोबर का भूमि पर जीवन दायी असर होता है. नक्षत्रीय प्रभाव के कारण गोबर में अकार्बनिक तत्वों को आत्मसात करने की ताकत पैदा होती है. गाय माता के सींग नक्षत्रीय ताकतों को ग्रहण करके उन्हें पाचन संस्थान तक पहुंचाते हैं. इसी वजह से गोबर में जीवनदायनी ताकत होती है. मृत गाय के सींग की खोल गोबर का असर बढ़ाने के लिये उत्तम पात्र है. सींग की खोल कुछ सालों तक उपयोग करने पर पतली होती है जिससे यह पता चलता है कि सींग में उपस्थित जीवाणुओं ने उसका उपयोग अपनी संख्या बढ़ाने तथा गोबर की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं. गोबर को सींग के अलावा दूसरे पात्र में यदि गाढ़ा जाये तो गोबर जैसा गाढ़ा गया था वैसा ही निकलता है.

प्रकार

500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508

विधि

गाय के गोबर को अच्छी तरह से मसलकर एक जैसा कर लें. यदि गोबर बहुत कड़ा हो गया हो तो थोड़ा सा पानी मिला लें. आवश्यक होने पर सींग को पत्थर या ईंट पर हल्की सी थपकी दें ताकि गोबर सींग खोल के अंदर पहुंच जाये. जब सींग खोलों में गोबर भर जाये तो गढे से निकाली हुई मिट्टी में थोड़ा सा गोबर का खाद मिलायें. यदि मिट्टी सूखी हो तो थोड़ा पानी मिलाकर मिट्टी में नमी पैदा कर लें. नमी इतनी हो कि मिट्टी का गोला बन जाये लेकिन अंगुलियों के बीच से नहीं निकले. सींगों को गढे में उनके नुकीले सिरे उपर रख कर जमायें. जब सारे सींग गढे में भर दिये गये हैं तो धीरे धीरे गढे को मिट्टी से भरें ताकि सींग गिरे नहीं. सींगों को गढे में भरने के बाद गढे के आसपास निशान के लिये चिन्ह लगा दें जिससे सींग खाद निकालते समय आसानी रहे.

सींग खाद में चंद्र की ताकत को काम करने का मौका मिलता है. ठंड के दिनों में दिन छोटे होते हैं तथा सूर्य की गर्मी भी कम पड़ती है तथा अतः चंद्र की ताकत को अपना असर बढ़ाने के लिये काफी समय मिलता है. सींग खाद बनाने के लिये शरद पूर्णिमा में ठीक रात्रि 12 बजे रोहणी नक्षत्र में ही सींग में गोबर भर कर कागज, प्लास्टिक, कपडे से लपेट देना चाहिये. ठीक 6 माह बाद सींग को जमीन से निकालना चाहिये. 6 माह के बाद सींग में नमी खत्म होने के कारण गोबर पूरी तरह से सूख जाता है. सींग को निकालकर सींग पर लगी मिट्टी साफ कर लें. सींग में से सूखे हुए गोबर को निकाल कर पीस लेना चाहिये. गोबर जितना पुराना होगा उतना ताकतवर होता है.

सावधानी

जीवित गोवंश का सींग अपने स्वार्थ के लिये मानव को कभी भी उखाड़ना नहीं चाहिये. सींग के महत्व को समझने पर जीवित गोवंश के सींग उखाड़ने की बहुत अधिक संभावना है. सींग के लिये गोवंश को

मारना नहीं चाहिये. मुसलमान गोवंश को अपने लाभ के लिये वैसे ही बहुत अधिक मारते हैं. सींग के महत्व बढ़ने पर गोवंश की हत्या को बढ़ावा मिल सकता है. गोवंश के मरने के बाद ही सींग का प्रयोग करना चाहिये. सींग अधिक दूध देने वाली गाय या बैल के अलावा दूसरा नहीं चाहिये. गाय कम से कम एक या दो बार ब्याही हुई हो. कम दूध देने वाली अथवा बांझ गाय का सींग प्रयोग नहीं करना चाहिये. बैलों के सींग में यदि रंग किया गया हो तो उसे निकाल दें. सींग टूटा हुआ उपयोग नहीं करना चाहिये.

सींग खाद बनाने पर सींग पतला हो जाता है. पतला होने पर सींग अलग कर देना चाहिये दुबारा पतले सींग का उपयोग नहीं करना चाहिये. सींग में दरार या छेद हो तो सींग का उपयोग नहीं करना चाहिये. एक सींग 4 से 5 साल तक प्रयोग किया जा सकता है. गोबर का चयन करते समय दुधारु गाय का गोबर लेना चाहिये. स्वस्थ गाय का ही गोबर ही प्रयोग में लायें. गाय को 15 दिनों तक दवायें नहीं दी गई हों तथा हरा चारा खाने वाली गाय का ताजा गोबर ही प्रयोग करें. सींग गाढ़ने के लिये अच्छी उपजाऊ जमीन होनी चाहिये. जमीन में पानी का भराव नहीं होना चाहिये.

सींग गाढ़ने के लिये 30 से 40 सेंटीमीटर यानी 1 से सवा फुट गहरा गड्ढा खोदना चाहिये. यदि इस स्तर पर मुरम आ जाये तो गड्ढे में जमीन के उपर की मिटटी की परत बिछा दें. सींग की संख्या के अनुसार गड्ढे की लंबाई चौड़ाई निर्धारित करें. यदि अधिक संख्या में सींग गाढ़ रहे हों तो 2 मीटर चौड़ा, 4 मीटर लंबा तथा 40 सेंटीमीटर गहरा गड्ढा बनाया जाये. सामान्यतः जिस तरह की मिटटी में सींग खाद बनाया जाता है उसी मिटटी के गुण ग्रहण कर लेता है. यदि मिटटी काली है तो सींग खाद काला हो जाता है. यदि मिटटी रेतीली हो तो वह सींग खाद भूरभूरा होगा. भले ही खाद का रंग अलग हो उसका असर एक सा ही रहेगा.

सींग खाद में उपस्थित जीवाणु

सींग खाद में बैक्टेरिया बेसिलस राडचेन, ग्राम कोकस कल्स्टर आदि एक्टीनोमाइसिटीज में एस्ट्रेपटोमासीज, एक्सीनोप्लेन, माइक्रोमोनेप्लेन, आद फुंटी में पेनीशिलियम, राइजोपस, एसपर्जीलस आदि मौजूद हैं.

लाभ

सींग खाद बहुत ही ताकतवर प्राकृतिक खाद है इसलिये सींग खाद की बहुत ही कम मात्रा ही खेतों के लिये पर्याप्त है. सींग खाद का भंडारण मिटटी के घड़े में करें. खाद मटके में भरते समय खाद में नमी का ध्यान रखें. एकदम सूखी खाद न भरें. पानी छिड़ककर नर्म कर लें. इस घड़े को किसी ठंडे स्थान पर रखें या जमीन में गाड़ दें. सींग खाद की ताकत से किसान अभी परिचित ही नहीं है इसलिये रासायनिक खाद के चंगुल से बाहर निकल नहीं पा रहा है.

सींग खाद बहुत बड़ी मात्रा में तैयार करने पर रासायनिक खाद का उपयोग पूरी तरह से बंद करना संभव है. 30 ग्राम सींग खाद बायोडायनामिक 500 प्रकार को 13 लीटर पानी में 1 घंटे तक अच्छी तरह से मिलाकर एक एकड़ भूमि में बोवाई के समय छिड़कना चाहिये. दूसरी बार जब फसल 20 दिन की हो जाये तब करना चाहिये. सींग खाद का उपयोग एक फसल में 2 बार किया जाता है. चंद्रमा की ताकत का उपयोग करने के लिये पंचमी से पूर्णिमा के बीच में ही करना चाहिये. अमावस्या के समय सींग खाद का खेती करने के लिये उपयोग नहीं करना चाहिये. सींग खाद का उपयोग संध्या के समय करना चाहिये. सींग खाद से उत्पन्न फसल बहुत अधिक उपयोगी है. सींग खाद के दो तीन साल लगातार उपयोग करने पर केंचुओं की संख्या तथा नमी बनाने वाले जीवों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है. जमीन भूरभूरी होने से जड़ें गहराई तक जाती हैं तथा मिटटी में नई ताकत चार गुना बढ़ जाती है.

सींग खाद 500 की नगद बिक्री करने के लिए हर गांव में सींग खाद दुकान, साप्ताहिक बाजार, मेला, सम्मेलन आदि समय समय पर आयोजित किए जायेंगे.

सींग सिलिका चूर्ण 501

गोबर के बदले रवेदार चकमक पत्थर का बहुत ही महीन चूर्ण तथा गाय के सींग के खोल में भरकर बसंत ऋतु के अंत में जमीन में गाड़कर शरद ऋतु में बाहर निकालना है. अर्थात् पूरे गर्मी के महीनों में जमीन में रहता है और इस तरह गर्मी के मौसम की तरह काम करने की शक्ति हमारे पास आ जाती है. सींग सिलिका प्रकाश संश्लेषण क्रिया में वृद्धि करके मजबूत पौधे बनाता है. पौधों की वृद्धि तथा बीज निर्माण क्रिया में गति आती है.

इसका मुख्य असर पत्तों पर होता है. इसके लिए आवश्यक है कि पौधों की जड़ों को मजबूत करने वाले नुस्खे 500 का उपयोग पहले किया जाए. तभी उसका पूर्ण लाभ प्राप्त होगा.

चूर्ण बनाने की विधि

सींग सिलिका चूर्ण बनाने के लिए सर्वप्रथम रवेदार चकमक पत्थर का चयन करें. ध्यान में रहे इस पत्थर में रवेदार अंश का ही उपयोग करें. धूल, मिट्टी व अन्य अशुद्धियों को साफ पानी से धोयें तथा उसे अच्छी तरह सूखा लें. इस चकमक पत्थर को लोहे के खलबत्ते अथवा लोहे के हथौड़े से फोड़-फोड़कर बारीक चूर्ण कर लें. इसे बारीक आटा छानने की छननी से छान लें. अब इस चूर्ण को दो कांच के बीच में रखकर पीसें, जिससे कि यह अत्यंत महीन हो जायेगा.

जब तक चेहरे पर लगाने जैसा पाउडर नहीं हो जाएगा तब तक इसे पीसते रहें. इस महीन चूर्ण को एक थाली में लेकर उसमें वर्षा या कुएं का पानी मिलाकर रोटी के आटे जैसा तैयार करें. इसको सींग के खोल में भरकर घंटे दो घंटे खड़ा रखें ताकि उसमें का अतिरिक्त पानी उपर आ जाये. इस पानी को फेंक दें. इन सींगों को 500 विधि के समान जमीन के अंदर गाढ़ दें. सींगों के चूर्ण को कांच की बरनी में भरकर हमेशा सूर्य के प्रकाश में ही रखें. अंधेरे में कभी न रखें.

सींग सिलिका चूर्ण के उपयोग की विधि

केवल 1 ग्राम सींग सिलिका खाद का चूर्ण एक एकड़ के लिए पर्याप्त है. 1 ग्राम खाद 13 लीटर पानी

में मिलायें. ध्यान रहे पानी बारिश या कुएं का ही हो. पानी में मिलाने पर उलटे और सीधे 1 घंटे तक अच्छी तरह से घूमायें. इस नुस्खे की बारीक फुआर नोजल स्प्रेयर को उपर कर प्रातःकाल के समय करें.

उपयोग का समय

सींग सिलिका का चूर्ण प्रकाश संश्लेषण क्रिया में वृद्धि करके मजबूत पौधे बनाता है. अतः जब पौधे में तीन चार पत्ते आ जाएं तब पहली बार सींग सिलिका चूर्ण का छिड़काव करें. जिन पौधों पर फफूंद रोग का आक्रमण अधिक होता हो उनमें प्रत्येक माह छिड़काव किया जाए जैसे टमाटर, मिर्च आदि. चूंकि यह नुस्खा फास्फोरस के साथ काम करता है इसलिए बीज एवं फूल बनाने की क्रिया तुरन्त प्रारम्भ होती है. इस नुस्खे का छिड़काव पौधों में फफूंद जन्य रोगों से बचाव के लिए साल भर किया जा सकता है. इसका छिड़काव वातावरण में गर्मी होने पर असरदार होता है इसलिए इसका छिड़काव प्रातःकाल में किया जाता है ताकि दिन दिन की गर्मी का पूरा पूरा लाभ मिल सके. सिलिका के बारीक कण सूर्य के प्रकाश में चमककर उसका प्रभाव कई गुना बढ़ा देते हैं. अतः गर्मी, उमस, सूर्य का प्रकाश ये तीनों मिलकर इसके असर को कई गुना अधिक बना देते हैं.

चंद्रमा पौधे में वृद्धि कारक है उसके असर से पौधे बढ़ेंगे लेकिन वे नरम एवं जल्दी सड़ने वाले होंगे. शनि के असर से पौधे के ढांचे का निर्माण होता है. शनि के असर से पौधे आकार ग्रहण करते हैं तथा वे मजबूत होते हैं. अतः नुस्खा 501 का श्रेष्ठतम असर प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग जब चंद्र शनि आमने सामने हों तब करना चाहिए. यह समय कैल्शियम एवं सिलिका प्रक्रियाओं को मजबूती से संतुलित करता है. अतः इस समय किया गया छिड़काव पौधों को कीटरोधी एवं मजबूत बनाता है. अतः इस समय नियमित छिड़काव से पाउडरी मिल्ड्यू, गेरवा, ब्लाइट आदि रोगों से पौधों का बचाव होता है. नुस्खा 501 के छिड़काव से बीज की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा उसे अधिक समय तक रखा जा सकता है. इसके छिड़काव से अंगूर की मिठास बढ़ती है. चो की भी मिठास बढ़ती है जिसे गोवंश चाव से खाते हैं.

सींग खाद बनाने से रोजगार

मरे हुए गोवंश के सींग एकत्र करने वालों को बहुत अच्छा स्वरोजगार सींग बैंक से मिलेगा. साल भर गांव में सींग को एकत्र करने पर बहुत अधिक धन प्राप्त होगा. सींग खाद के प्रत्येक गांव में निर्माण करने तथा भारत के गांवों में किसानों को सींग खाद का लाभ समझाकर बेचने पर प्रतिदिन 100 से अधिक रुपयें कमाने का सुनहरा मौका निश्चित है. किसान को सींग खाद के बारे में पता ही नहीं है. वर्तमान में भारत में मरी हुई गाय या बैल के सींग का उपयोग नहीं किया जाता है.

सींग खाद बनाने पर गोपालकों को सींग का मूल्य अच्छा मिलेगा. सींग खाद से गोपालन को बढ़ावा मिलेगा. अधिक दूध देने वाली गाय के सींग की आवश्यकता होती है इसलिये अधिक दूध देने वाली गायों को महत्व दिया जायेगा. सींग खाद से जैविक खेती भारत में पूरी तरह से स्थापित होगी. सींग खाद के द्वारा शिक्षित युवा बेरोजगारों को बहुत अच्छा रोजगार पूरे भारत में मिल सकता है. वर्तमान में सींग खाद 4000 रुपये किलो कानपुर गोशाला के द्वारा बेचा जाता है. सींग खाद बनाने के लिये 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508 हैं. सींग खाद बनाने के लिये 500 जैवगति की पद्धति का महत्वपूर्ण तरीका है.

सी.पी.पी. खाद

सीपीपी खाद यानी काउ पेट पिट या मृदा शेम्पू ताजे गाय के गोबर अधिकतम 24 घंटा पुराना से 2.5 से 3 माह में तैयार की जाती है. प्रत्येक गांव में सीपीपी खाद थोड़ी तकनीकी जानकारी के बाद आसानी से बनायी जाती है. सीपीपी कम लागत में तैयार होने के कारण किसान मित्र खाद है. सी.पी.पी. खाद के बारे में बहुत ही कम किसानों को जानकारी है. सीपीपी खाद का उपयोग बहुत कम किसानों ने अपने खेतों में किया है. सीपीपी खाद गिने चुने किसानों के द्वारा ही वर्तमान में तैयार किया जाता है. वर्तमान में विश्व में जैविक खाद की मांग तेजी से बढ़ने के कारण सीपीपी खाद के प्रति लोगों में जागृति उत्पन्न हुई है. सीपीपी खाद तैयार करने का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करने, सीपीपी खाद बिक्री

करने के लिये वर्तमान में सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों से संपर्क किया जा सकता है.

महारा-द्र में अमेरिका से वापस आये श्री सर्वदमन पटेल के नेतृत्व में सीपीपी खाद बनाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है. डिस्कवरी चैनल में 28 जून 2009 को 1 घंटे तक जैविक खेती के बारे में बताया गया था. बायोडायनामिक पद्धति के बारे में बताया गया था. उत्तरप्रदेश में सीपीपी खाद तैयार करने के लिये यूपीडास्प के द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है. वर्तमान में भारत में बहुत कम लोग सीपीपी बनाने के बारे में जानते हैं इसलिये सीपीपी बनाने वालों को बहुत अच्छा मूल्य मिल सकता है. सीपीपी खाद 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से प्रयोग की जाने वाली एक ऐसी कंपोस्ट है जिसका प्रयोग मिट्टी में बुवाई के पहले, फसलों पर, बगानों में, बीज शोधन एवं नर्सरी विकास में किया जा सकता है. सीपीपी का प्रयोग नर्सरी में ग्राफ्टिंग, रुट ड्रिपिंग, रुटिंग के लिये लाभकारी है. सब्जी की खेती में 3-4 बार सीपीपी का प्रयोग करने पर सब्जी की उपज एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है.

सीपीपी का प्रयोग बागानों में कटाई छटाई के बाद पेस्ट के रूप में बहुत बड़े स्तर पर किया जा सकता है. रोगों के नियंत्रण एवं कीड़े मकोड़ों के रोकथाम में सीपीपी खाद बहुत उपयोगी है. वर्मीकंपोस्ट, नेडेप एवं अन्य तरह के कंपोस्ट बनाने में भी सीपीपी का प्रयोग सूक्ष्म जैवीय क्रियाशीलता को बढ़ाने में किया जा सकता है. 200 ग्राम सीपीपी प्रति किलोग्राम बीज के लिये अत्यधिक लाभकारी है. सीपीपी खाद की जबरदस्त मांग के अनुरूप वर्तमान में उत्पादन ही नहीं है. रासायनिक खाद की तुलना में पानी की बचत 6 गुना होने के कारण भारत के लिये यह बहुत आवश्यक है. गोपालन को सीपीपी खाद बड़े स्तर पर तैयार करने से बहुत अधिक बढ़ावा निश्चित ही मिलेगा.

सीपीपी बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

दुधारु गाय का ताजा गोबर 60 किलोग्राम, मुर्गी के अंडे के छिलके का पाउडर 250 ग्राम, बसाल्ट पावडर, वेन्टोनाइट, वोर-स्वायल 250 ग्राम, जूट या टाट का बोरा पुराना एक, कंपोस्ट का गढढा 3 फुट 2 फुट

1.5 फुट बनाने हेतु 60-70 ईट या लकड़ी का पटरा या उसी आकार का फ्रेम, बायोडायनामिक सेट बीडी 502 से 507

गडढा बनाने की विधि

अच्छी खेतिहर उर्वरता वाली मिटटी में पौधों की जड़ें. न हों जहां पानी न लगता हो हवा का संचार सुचारु रूप से होता हो सीपीपी खाद बनाने के लिये एक गडढा बनाते हैं. गडढे के तले में कोई ईट या गिटटी नहीं लगी रहनी चाहिये. गडढे को पेड के नीचे न बनायें. सीपीपी का गडढा इस तरह से ढका होना चाहिये कि उसमें उपर से पानी न जा सके. गडढे के उपर एक छप्पर बनवा दिया जाये.

गडढा भरने की विधि

60 किलोग्राम दुधारु गाय के ताजे गोबर को सफाई से एकत्र कर उसमें 250 ग्राम मुर्गी के अंडे के छिलके का पाउडर एवं 250 ग्राम वसाल्ट या वेन्टोनाइट, बोरस्वायल का बारीक पावडर को आटे की लोई की तरह 15-20 मिनट तक अच्छी तरह से मिलाते हैं. मिश्रित गोबर को तैयार गडढे में बराबर डालकर समतल कर देते हैं.

बायोडायनामिक कल्चर मिलाना

मिश्रित गोबर की सतह पर लकड़ी से बीचोबीच गहराई से छिद्र बराबर दूरी पर बनायें. 502 से 506 के कल्चर को सावधानीपूर्वक हर छिद्र में डालें. तत्काल छिद्र बंद कर दें. 507 को 2 लीटर साफ पानी में 10 से 15 मिनट तक अच्छी तरह से उलटा एवं सीधा घोलें. 7 से 9 छिद्र बनाकर घोल को छिद्रों में डालकर छिद्र बंद कर दें. बचे घोल को गोबर की तह पर छिडक दें. किसी पुराने जूट या टाट के बोरे को पानी में धोकर साफ कर लें. बोरे को गोबर की सतह पर बिछाते हुए ढक दें. गडढे को उपर से ढकने के लिये छप्पर बनवा दें. तैयार खाद की मात्रा 40 से 45 किलो होती है. बरसात के समय 70 दिन, गरमी में 80 दिन तथा ठंड में 90 दिन खाद तैयार करने में समय लगता है. 80 से

90 एकड़ के लिये 40 से 45 किलो सीपीपी खाद पर्याप्त है.

प्रयोग विधि

500 ग्राम खाद 40 लीटर पानी के डम या बालटी में घोलते हैं. घोल का प्रयोग सूर्यादय से पहले अथवा सूर्यास्त के बाद करना अधिक उपयोगी होता है. घोल को झाडू की मदद से खेत में जुताई के पहले व बाद में मिटटी पर या फसल के उपर टाप ड्रेसिंग के रूप में की जा सकती है. सीपीपी खाद का प्रयोग विभिन्न प्रकार के पादप रोगों की रोकथाम, नर्सरी विकास, बागान प्रबन्धन में किया जा सकता है. सीपीपी खाद का प्रयोग कलम एवं अन्य संवर्धन क्रियाओं में किया जा सकता है. सब्जी, फल पौधों में प्रयोग करने से अच्छी वृद्धि होती है.

मटका खाद

प्रस्तावना

वर्तमान में जैविक खेती करने के लिये मटका खाद भारत के हर गांव में बड़े स्तर पर तैयार करने की आवश्यकता है. मटका खाद गांव में हर घर में तैयार किया जा सकता है. भारत का किसान मटका खाद की ताकत से परिचित ही नहीं है. मटका खाद भारत में बनने वाली सभी खादों में सबसे कम लागत में बहुत ही आसानी से जल्दी बनने वाली तथा सबसे सस्ती खाद है. किसान यदि एक बार मटका खाद अपने खेत में उपयोग करेगा तो सभी खादों को पूरी तरह से भूल जायेगा. मटका खाद बनाने के लिये बड़े आकार के मटके तैयार करने चाहिये. वर्तमान में गोधन की स्थिति भारत में बहुत ही खराब है इसलिये खेती करने के लिये गाय का गोबर मिल नहीं पा रहा है.

भारत के गांव में शिक्षित युवा बेरोजगार एक देशी गाय से गोमूत्र तथा गोबर का उपयोग कर 1 साल में मटका खाद तैयार कर 1 लाख रुपये बहुत ही आसानी से कमा सकता है. भोपाल में केंद्रीय जेल में 700 गायों के द्वारा संचालित गोशाला से गोबर प्राप्त कर 2800 कैदियों के द्वारा 40 एकड़ भूमि पर बहुत बड़े स्तर पर मटका खाद तैयार कर खेती की जाती है.

वर्तमान में भारत में 1980 तक सभी जिलों में गोशालायें मौजूद थीं. 1980 के बाद गोशालायें जिल में अचानक ही बंद कर दी गयी थी. मध्यप्रदेश में 80 जिलों में गोशालायें प्रारम्भ कर मटका खाद तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया गया है. छत्तीसगढ़ राज्य में भी रायपुर, कोरबा, अंबिकापुर, जगदलपुर में भी जिल में गोशालायें प्रारम्भ कर मटका खाद तैयार करने की तैयारी की गयी है. ग्रामीण स्तर पर रोजगार कार्यालय में पंचायत स्तर पर मटका खाद के बारे में बताने के लिये सरकार को योजना लानी अनिवार्य है. महिलाओं को मटका खाद बनाने के लिये सामने आना बहुत आवश्यक है.

वर्तमान में भारत में रासायनिक खाद में मिलावट, नकली रासायनिक खाद तथा कालाबाजारी बहुत बड़े स्तर पर की जा रही है जिससे किसान बहुत अधिक परेशान हैं.. विश्व में जैविक खाद से उत्पन्न अनाज की मांग बहुत ही अधिक है. जैविक खाद से उत्पन्न अनाज बहुत ही मिठास युक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक हैं. भारत में विश्व के बदलते हुए विचार के कारण जैविक खेती करने के लिये जागरूकता बढ़ रही है. भारत सरकार स्वयं मटका खाद को बढ़ावा देने के लिये योजनायें तैयार कर रही है. मटका खाद की जानकारी भारत के हर गांव में किसानों तक पहुंचाने के लिये युवाओं को अपने खेतों में रासायनिक खाद का मोह त्याग कर मटका खाद का प्रयोग कर दिखाना होगा.

किसानों को मटका खाद का महत्व समझने में आने पर रासायनिक खाद का प्रयोग किसान स्वयं ही बंद कर देंगे. मटका खाद से बेरोजगारों को रोजगार बहुत बड़े स्तर पर मिलना संभव है. मटका खाद के प्रयोग करने से भारत फिर से सोने की चिड़िया बन जायेगा. भारत में प्रत्येक फसल के लिये 40 मिलियन टन खाद की आवश्यकता होती है. भारत में वर्तमान में खेती करने के लिये कुल खर्च का 30 प्रतिशत रासायनिक खाद पर खर्च करना पड़ रहा है. भारत को अपने बजट का बहुत बड़ा भाग 111 बिलियन रुपये रासायनिक खाद के लिये खर्च करना पड़ रहा है.

भारत को अपनी आवश्यकता के लिये रासायनिक खाद का आयात मजबूरन करना पड़ता है. रासायनिक खाद के प्रयोग करने के कारण 33000

प्रकार की बीमारियां खेती में हो रही हैं जिसके कारण 535 जहरीले खतरनाक प्राणघातक कीटनाशकों का प्रयोग खेती में करना पड़ता है जिसके कारण मानव को जानबूझकर जहर खाना पड़ रहा है. मटका खाद के प्रयोग करने से रासायनिक खाद की तुलना में 6 गुना पानी की बचत होती है.

विश्व में पानी की समस्या बहुत गंभीर हो गई है. रासायनिक खाद के प्रयोग को किसान भी अब पूरी तरह से बंद करना चाहता है. मटका खाद नीमच गोशाला विधि के नाम से जानी जाती है. मटका खाद बनाने के लिये प्रशिक्षण भी वर्तमान में भारत में बहुत ही आसानी से उपलब्ध है. मटका खाद किसानों के द्वारा गांव गांव में बनाने से देशी गाय एवं बैल के गोमूत्र, गोबर को बढ़ावा मिलेगा. गोपालकों और किसानों को भारत में प्रोत्साहन मिलने के कारण देशी गाय एवं बैल की नस्ल सुधार को प्रगति मिलेगी. गांव में मटका बनाने वालों का स्वरोजगार बढ़ जायेगा. खेती करने की लागत मटका खाद के उपयोग करने से बहुत ही कम हो जायेगी. खेती की भूमि बहुत उपजाऊ हो जायेगी.

मटका खाद बनाने के लिये आवश्यक सामग्री

15 किलो देशी गाय का ताजा गोबर, देशी गाय का 15 लीटर ताजा गोमूत्र, 15 लीटर पानी तथा मिट्टी का घड़ा, 250 ग्राम गुड़ है.

मटका खाद बनाने की विधि

गोबर, गोमूत्र, पानी, गुड़ मटके में अच्छी तरह से घोल लें. उपर से कपडा या टाट मिट्टी से पैक कर दें. 4-5 दिनों में मटका खाद तैयार हो जाती है.

खेती में मटका खाद का उपयोग

किसान अपने हाथ से मटका खाद में 200 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ खेत में समान रूप से छिड़क दें. यह छिड़काव बोनी के 15 दिनों बाद करें. 7 दिनों बाद दोहरायें. सामान्य फसलों में 3-4 बार तथा गन्ने, केले, हल्दी की फसलों में 8 बार छिड़कें. भारत

में ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय की नीव रखकर मटके खाद का कार्य करना संभव है.

तरल औषधीय खाद

संजीवनी खाद का सुधरा हुआ रूप तरल औषधीय खाद है. श्री वी.के. सचान जी कृषि वैज्ञानिक संभागीय कृषि परीक्षण तथा प्रदर्शन केंद्र, कृषि विभाग, कृषि भवन, सिविल लाइन झांसी उत्तरप्रदेश मोबाइल 09451936061 के द्वारा जैविक खाद की मांग को ध्यान में रखकर तरल औषधीय खाद का विकास किया गया है. मटका खाद का विकसित स्वरूप तरल औषधीय खाद है. तरल औषधीय खाद बनाने के लिये मटके के बदले में गोल पक्का टैंक 4 से 6 फीट व्यास का 3 फीट गहरा प्रयोग किया जाता है. टैंक आधा जमीन के अंदर हो तथा आधा जमीन के बाहर हो. बाहर का भाग का निर्माण पक्की ईंटों तथा सीमेंट से किया जाता है. अंदर से अच्छी विधि से प्लास्टर किया जाता है ताकि तरल पदार्थ रिसकर बहने न पाये.

आवश्यक सामग्री

गोवंश का गोबर 15 क्विंटल, गोवंश का मूत्र 300 से 600 लीटर, निमौली पिंसी हुई 2 से 4 क्विंटल, नीम की पत्तियां 2 से 4 क्विंटल, आक, धतूरा की पत्तियां 2 से 4 क्विंटल, अंडे के छिलके 40 से 50 किलोग्राम, मटठा 100 से 200 लीटर, वट वृक्ष के नीचे की मिटटी 1 से 2 क्विंटल, पानी आवश्यकतानुसार चाहिये.

बनाने की विधि

सभी सामग्री को चाहें तो एक साथ एक दिन में भर देना चाहिये या जैसे जैसे मिले वैसे भरनी चाहिये. धतूरा, नीम, आक की पत्तियां चारा काटने की मशीन से बारीक काटकर डालना चाहिये. समस्त पदार्थों को अच्छी तरह से मिला लेना चाहिये. गाय का मूत्र 300 से 600 लीटर एक साथ मिलना कठिन है इसलिये जब गोमूत्र जितना मिल जाये डाल देना चाहिये. इस खाद को तैयार करने में 60 दिन का समय लगता है. 25 से

30 क्विंटल या 2500 से 3000 लीटर खाद एक बार में तैयार होती है.

प्रयोग विधि

इस खाद को किसान खड़ी फसल में प्रयोग करना चाहे तो पानी की मात्रा 100 लीटर मिलाकर करे. सूखी खाद एक एकड़ में 2 क्विंटल प्रयोग की जाती है.

भभूत अमृत पानी

प्रस्तावना

अमृत पानी एक सक्रिय जैविक उत्प्रेरक है जिसका प्रयोग बहुत अधिक बढ़ा है. यह जैविक खाद नहीं है. यह माटी को सजीव करने की प्रक्रिया है. इसका प्रयोग करने से माटी जाग उठती है. अमृत पानी भूमि की उर्वरता को बढ़ाता है. भारत में भभूत अमृत पानी को गांव गांव में लोकप्रिय बनाने के लिये वर्तमान में व्यापक स्तर पर किसानों में जागृति उत्पन्न करने की आवश्यकता है. रासायनिक खाद के बदले जैविक खेती करने की बात पूरे विश्व में समझ में आने लगी है इसलिये संस्कारित उर्जावान युवाओं को किसानों को समझाने के लिये गांवों में स्वयं अपने खेतों में अमृत पानी का सफल प्रयोग करके दिखाने होंगे.

गोशालाओं के द्वारा अमृत पानी का उपयोग गांवों में किया जा रहा है. भभूत अमृत पानी के द्वारा गोपालन को गांवों में बहुत लम्बे समय तक बढ़ावा मिलेगा. बोंवनी के पूर्व खेत में बड के पेड के नीचे की 15 से 20 किलो नमी युक्त मिटटी जिसे भभूत कहते हैं प्रति एकड़ में छिडक कर बिखेरें.

अमृत पानी तैयार करने की विधि

अमृत पानी तैयार करने की विधि बहुत ही आसान है. देशी गाय के 10 किलो ताजे गोबर में देशी गाय के दूध से बना नोनीया घी 250 ग्राम अच्छी तरह से फेंट लें. 500 ग्राम मधु मिलाकर अच्छी तरह से फेंट लें. इस मिश्रण में से आधा किलो मिश्रण लेकर उसमें आधा किलो बड के पेड की मिटटी अच्छी तरह से मिला

लें. अब इस 1 किलोग्राम मिश्रण को पतला कर बोये जाने वाले बीज पर छिड़ककर अच्छी तरह से संस्कारित करें जिससे बीज पर मिश्रण की परत चढ जाये. बीज को छाया में सुखा कर बोनी करें. अमृत पानी का छिड़काव बोवनी के पूर्व की सिंचाई के साथ या बोवनी के बाद की प्रथम सिंचाई के साथ दें. श्री मोहनशंकर देशपांडे जी ने 3 लाख किसानों को अमृतपानी तैयार करने एवं अमृतपानी का उपयोग करने के लिये मार्गदर्शन दिया है. श्री मोहनशंकर देशपांडे ग्राम आजरा जिला कोल्हापुर से आप अमृत पानी तैयार करने का प्रशिक्षण और साहित्य संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

समाधि खाद

समाधि खाद का चलन वर्तमान में भारत में अज्ञानता, गरीबी, आलस, लापरवाही, गलतफहमियां, अंधविश्वास के कारण बहुत ही कम है. कार्बनिक अवशेष हर साल भारत में 30,000 लाख टन हर साल उत्पन्न होता है. गोवंश के मरने के बाद कार्बनिक अवशेष की कुल मात्रा कितनी उत्पन्न होती है ठीक ढंग से ज्ञात नहीं है. कार्बनिक अवशेष को उपयोग करने के लिये विश्व में केंचुआ खाद का उपयोग बहुत अधिक किया जाता है. कार्बनिक अवशेष का उपयोग करने के लिये समाधि खाद वरदान साबित हो सकती है.

समाधि खाद बनाने के लिये अंधविश्वास दूर करना बहुत अधिक आवश्यक है. समाधि खाद पर वैज्ञानिक जानकारी का वर्तमान में पूरी तरह से अभाव है. समाधि खाद के बारे में अभी किसी को भी पूरी वैज्ञानिक जानकारी नहीं है इसलिये समाधि खाद कोई तैयार नहीं कर रहा है. समाधि खाद हर गांव में तैयार करने पर युवाओं को स्वरोजगार मिलेगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलने के कारण बहुत अधिक बढ़ावा मिलेगा.

श्री वी.के. सचान जी कृषि वैज्ञानिक संभागीय कृषि परीक्षण तथा प्रदर्शन केंद्र, कृषि विभाग, कृषि भवन, सिविल लाइन झांसी उत्तरप्रदेश मोबाइल 09451936061 के द्वारा 2001 से 500 किसानों को समाधि खाद तैयार करने के लिये प्रेरित किया गया है जिसके कारण 5 सालों में किसानों ने बहुत बड़ी मात्रा

में समाधि खाद तैयार कर मालामाल हुए हैं. जीवन का आधार टिकाऊ कृषि स्मारिका मूल्य 52 रुपये में समाधि खाद के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है. भारत के किसानों को समाधि खाद के लिये निःशुल्क मार्गदर्शन उपलब्ध है. समाधि खाद के परीक्षण करने के लिये प्रयोगशाला उपलब्ध है. प्रयोगशाला में समाधि खाद में उपलब्ध आवश्यक सभी महत्वपूर्ण तत्वों के बारे में संपूर्ण जानकारी पूरी तरह से निःशुल्क उपलब्ध है.

समाधि खाद 6 माह के आसपास तैयार किया जा सकता है. 6 माह के बाद समाधि खाद तैयार होने पर किसान मालामाल हो जायेगा. समाधि खाद का मूल्य बहुत अधिक है तथा मांग जबरदस्त होने के कारण हाथो हाथ बिक जायेगा. समाधि खाद को तैयार करने के लिये बहुत अधिक गहन वैज्ञानिक अनुसंधान की आवश्यकता है. वर्तमान में समाधि खाद बिना वैज्ञानिक जानकारी के तैयार करने का प्रयास कुछ किसानों के द्वारा किया गया है. जैविक खाद की मांग बढ़ने के कारण ही अब किसानों का ध्यान समाधि खाद बनाने के लिये गया है. समाधि खाद बनाने के लिये लागत कुछ भी नहीं है.

समाधि खाद बहुत बड़ी मात्रा में तैयार करना संभव है. समाधि खाद तैयार करने के लिये किसान को संपूर्ण वैज्ञानिक प्रशिक्षण अवश्य ही लेना चाहिये जिससे समाधि खाद का उपयोग अच्छी तरह से कर सके. भारत में गोवंश के मरने पर उसका कोई उपयोग नहीं किया जाता है जिसके कारण गोवंश का दुरपयोग होता है. गोवंश को मरने के बाद जमीन में गाढ़ना अनिवार्य है जिससे पर्यावरण समस्या का संपूर्ण समाधान करना संभव है.

भारत में गोवंश की संख्या बहुत अधिक है तथा गोपालन बहुत ही प्राचीन समय से किया जा रहा है. वर्तमान में आधुनिक यंत्रों के उपयोग के कारण बैलों का उपयोग बहुत कम हो गया है इसलिये बैलों को कतलखाने में कटने भेज दिया जाता है. बैल को बचाने के लिये समाधि खाद कानूनी आधार बन सकती है. इसलिये प्राकृतिक रूप से प्रतिदिन बहुत बड़ी संख्या में गोवंश की मृत्यु होती है. गोवंश में असाधारण उर्जा

मौजूद है तथा मानव गोवंश के जीवित रहने पर उर्जा का सदुपयोग करता रहता है.

गोवंश के मरने के बाद भी गोवंश की असाधारण उर्जा का सदुपयोग करने के लिये समाधि खाद है. गोवंश के खून में अदभुत उर्जा मौजूद है. गोवंश के खून का उपयोग मरने के बाद समाधि खाद में अच्छी तरह से हो जाता है. वर्तमान में गोवंश के खून का उपयोग करने के लिये कतलखानों को बढ़ावा दिया जाता है. समाधि खाद के कारण भारत में कतलखाने बंद करवाना संभव है. समाधि खाद बनाने पर गोवंश का पालन हर घर में बढ़ जायेगा.

गोवंश को पालने पर पूरा ध्यान देने के लिये समाधि खाद वरदान है. समाधि खाद के रूप में जैविक खाद के उपयोग करने के कारण रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लिये वर्तमान में जबरदस्ती खर्च किये जा रहे धन की बचत हो जायेगी. समाधि खाद का उपयोग बढ़ने पर पानी की बहुत अधिक बचत निश्चित रूप से होगी क्योंकि समाधि खाद में रासायनिक खाद की तुलना में 6 गुना कम पानी चाहिये. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के कारण मानव में बढ़ रही बीमारियों को रोकने में मदद मिलेगी.

नाडेप खाद

नाडेप खाद बनाने का मार्गदर्शन किसानों के द्वारा वर्तमान में नाडेप खाद के जनक श्री नारायणराव देवराव पंढरीपांडे यानी स्वर्गीय नाडेप काका के सुपुत्र श्री अविनाश पंढरीपांडे जी डाक्टर कुमारअप्पा गोबरधन केंद्र बकूका नाडेप एक्सपेरिमेंट 60, मोती नगर, पुसद, जिला यवतमाल 445204 से प्राप्त किया जा सकता है. श्री अविनाश जी स्वयं किसानों को नाडेप खाद बनाने के लिये सिखाने के लिये भी पूरे भारत में जाते हैं. उनके द्वारा किसानों के लिये वीडियो सीडी भी तैयार की गयी है. वर्तमान में भारत में 12 राज्यों में नाडेप खाद का प्रयोग किया जाता है. नाडेप खाद को भारत के 28 राज्यों तक लोकप्रिय बनाने के लिये सभी को संगठित स्तर पर मिलकर प्रयत्न करने की आवश्यकता है. प्रत्येक नाडेप टांका तैयार करने पर 5 रु अविनाश जी

को अवश्य ही भेजना चाहिये. नाडेप तीन प्रकार के बनाये जाते हैं.

पक्का नाडेप

पक्का नाडेप इंटों के द्वारा बनाये जाते हैं. नाडेप टांके का आकार 10 फीट लम्बा 6 फीट चौड़ा और 3 फीट उंचा अथवा 12 फीट लम्बा 5 फीट चौड़ा तथा 3 फीट उंचा होता है. इंटों को जोड़ते समय तीसरे, छठवे, नौवे रददे में मधुमक्खी के छत्ते के समान 6-7 इंच के ब्लाक छोड़ दिये जायें जिससे टांके के अंदर रखे पदार्थ को बाहर से हवा मिलती रहे. एक टांके में तीन बार खाद तैयार किया जा सकता है.

कच्चा नाडेप

कच्चे नाडेप परम्परागत तरीके के विपरीत बिना गडढा खोदे जमीन पर एक निश्चित आकार 12,5,3 फीट अथवा 10,6,3 फीट के अनुसार ले आउट देकर बनाया जाता है. इस प्रकार दिये गये ले आउट पर पक्के नाडेप की विधि के अनुसार टांका भरा जावे. इस प्रकार लगभग 5 से 6 फीट उंचाई तक टांका भर जाने पर एक आयताकार ढेर बनायें. इस आयताकार व व्यवस्थित ढेर को चारों ओर से गीली मिट्टी से लीप कर बंद कर दिया जाये. बंद करने के दूसरे अथवा तीसरे दिन जब गीली मिट्टी कुछ कडी हो जाये तब गोलाकार अथवा आयताकार टीन के डिब्बे से ढेर की लंबाई व चौड़ाई में 9-9 इंच के अंतर पर 7-8 इंच के गहरे छिद्र बनाये जायें. छिद्रों से हवा का आवागमन होता है तथा आवश्यकता पडने पर पानी डाला जा सकता है ताकि बायोमास में पर्याप्त नमी रहे और विघटन क्रिया अच्छी तरह से हो सके. इस तरह से बायोमास 3 से 4 माह के भीतर भलीभांति पक जाता है तथा अच्छी तरह पकी हुई भुरभुरी, भूरे रंग की दुर्गंध रहित उत्तम गुणवत्ता की जैविक खाद तैयार हो जायेगी.

टटिया नाडेप

टटिया नाडेप कच्चे नाडेप की तरह ही होता है किंतु इसमें आयताकार व व्यवस्थित ढेर को चारों ओर से गीली मिट्टी से लेप देने की जगह इसे बांस, बेशरम की

लकड़ी आदि से टटिया बनाकर चारों ओर से बंदकर दिया जाता है. इसमें हवा का आवागमन स्वाभाविक रूप से छेद होने के कारण अपने आप ही होता रहता है.

नाडेप खाद बनाने की विधि

आवश्यक सामग्री

खेतों पर उपलब्ध कचरे में प्लास्टिक, कांच, पत्थर नहीं रहना चाहिये. कचरे में सूखे पत्ते, छिलके, डंढल, टहनियां, जड़ें आदि. मात्रा 1400 से 1600 किलो, गाय माता का गोबर. गोबर गैस संयंत्र से निकला हुआ गोबर का घोल हो तो ज्यादा लाभदायी है. मात्रा 100 से 120 किलो यानी 8 से 10 टोकरी, मिट्टी भुरभुरी सूखी छनी हुई. मिट्टी खेत की या नाले की ही लें. मिट्टी गोमूत्र से सनी हुई हो तो ज्यादा लाभदायी है. खाद की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये गोमूत्र का उपयोग किया जाता है. मात्रा 600 से 1800 किलो लगभग 120 टोकरी, पानी ऋतु के अनुसार कम ज्यादा होगा. मात्रा 1500 से 2000 लीटर 8 से 10 डम यदि बायोमास हरा एवं गीला है तो पानी की आवश्यकता है. खाद सामग्री एकत्रित कर एक ही दिन में अधिक से अधिक 48 घंटों में पूरी तरह से भर कर सील कर दी जाती है.

प्रथम उपचार

टांके को भरने के पहले टांके की अंदर की दीवारों एवं फर्श पर गोबर का घोल अच्छी तरह से छिड़क कर अच्छा गीला तर कर लें.

प्रथम परत

वानस्पतिक पदार्थ यानी बायोमास कचरा आदि को 3-4 इंच के टुकड़ों में काट लें तथा 6 इंच की मोटी तह बनायें. 30 घन फीट में 100 से 110 किलो सामग्री आयेगी.

दूसरी परत

4-5 किलो गोबर 100 से 125 लीटर पानी में घोल कर वानस्पतिक पदार्थ की पहली परत पर इस तरह से छिड़कें जिससे पूरी तरह से भीग जाये. गर्मी के मौसम में पानी का अंश अधिक रखें. गोबर गैस की स्लरी 10 लीटर ली जाये.

तीसरी परत

साफ सूखी मिट्टी 50 से 60 किलो समतल बिछा दें. उस पर गोबर का घोल छिड़क दें. इसी क्रम में 10 से 12 परतों तक झोपडीनुमा आकार में टांके के ढेड फुट उपर तक भरना है. भरी सामग्री के उपर 3 इंच की मिट्टी लगभग 400 से 500 किलो मिट्टी की तह जमा दें और उसे गोबर के मिश्रण से लीप दिया जाये. इस पर दरार न पडने दें. दरार पडने पर उन्हें भी लीपें. 5-6 दिनों के बाद जाली के छेदों में से देखें गरमी महसूस होगी. 15-20 दिनों में टांके की सामग्री सिकुडकर टांके के 8-9 इंच अंदर धंस जायेगी.

द्वितीय उपचार

प्रथम उपचार की तरह ही वानस्पतिक पदार्थ, गोबर घोल, छनी मिट्टी की परतों से पुनः टांके से ढेड फुट उपर तक भरकर उपर 3 इंच मिट्टी की परत देकर पहले जैसा ही गोबर से जीप दें. नाडेप कंपोस्ट पकने के लिये पहली भराई की तारीख से 90 से 120 दिन लगते हैं. इस पूरे समय में खाद में नमी बनी रहने के लिये तथा दरारें बंद करने के लिये गोबर घोल का छिड़काव करते रहना चाहिये. घांस उगे तो उसे निकाल दें. यदि कडी धूप हो तो खाद पर घांस फूस की चटाई से छाया कर दें.

खाद की परिपक्वता

तीन चार माह में खाद गहरे भूरे रंग की बन जाती है और सब दुर्गन्ध समाप्त होकर एक अच्छी सुगंध आती है. इस खाद को एक फुट में 35 तार वाली छलनी से छलनी आडी रखकर छान लेना चाहिये. एक टांके में 2.5 से 2.7 टन खाद निकलती है जो एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिये पर्याप्त होती है.

नाडेप खाद का खेतों में उपयोग

नाडेप खाद का खेतों में पूरी तरह से उपयोग करने के लिये किसानों की सोच बदलने के लिये पर्याप्त मात्रा में नाडेप खाद किसान के पास आसानी से उपलब्ध होना आवश्यक है. वर्तमान में भारत में गांवों में आसानी से प्रशिक्षण नहीं मिलने के कारण ही नाडेप खाद बहुत ही कम लगभग 2.7 प्रतिशत बनने के कारण किसानों के पास खेतों में प्रयोग करने के लिये खाद की दुकानों में नाडेप खाद उपलब्ध नहीं है. भारत में रासायनिक खाद की तरह ही नाडेप खाद भी बहुत आसानी से हर जगह आसानी से उपलब्ध हो सके इसके लिये हर गो प्रेमी को गंभीरता के साथ चिंतन कर संतुलित गोपालन करने के लिये किसानों को प्रेरित करने तथा संगठित रूप से इस दिशा में ठोस प्रयत्न करने की आवश्यकता है.

किसान को प्रति एकड़ प्रति साल 3 से 5 टन खाद बोन के 15 दिनों पूर्व खेत में फैलाकर बखेर चलाकर मिट्टी में मिला देना चाहिये. यदि पहले साल में रासायनिक खाद खेतों में न देनी हो तो कम से कम 10 टन प्रति एकड़ नाडेप खाद देनी चाहिये. नाडेप खाद की मात्रा कम हो तो बोकर भी खाद दिया जा सकता है. वर्तमान में रासायनिक खाद का उपयोग करने वाले किसानों को नाडेप खाद का खेतों में उपयोग करने के पूर्व नाडेप खाद का उपयोग करने वाले किसानों से मिलकर विस्तार से मार्गदर्शन अवश्य लेना चाहिये. रासायनिक खाद तो भूमि को उत्तेजना देने के लिये है. भूमि गोबर खाद नहीं मिलने के कारण भूखी रहती है. प्रयोग के तौर पर कम से कम एक एकड़ खेत में नाडेप खाद का प्रयोग कर परिणाम देखने का प्रयास करना चाहिये जिससे अच्छी तरह से विश्वास आ सके.

नाडेप खाद बढ़िया बनाने के लिये 75 से 90 दिनों बाद जब खाद लगभग पक गई हो और तापमान सामान्य हो जावे तब टांके में सब्बल से जगह जगह 15-20 छेद करें. अब एक एक किलो राइजोबियम जीवाणु एकजोबेटर जीवाणु और पीएसएम एक एक बाल्टी पानी में अलग अलग घोल कर अलग अलग छेदों में डालें. छेदों को अब बंद कर दें. उचित यह होगा कि जिस फसल में उत्पादित खाद का उपयोग किया जाना है

उसी फसल से संबंधित राइजोबियम कल्चर का उपयोग करें. नाडेप खाद की गुणवत्ता बढने पर फसल का उत्पादन बढ जाता है. नाडेप खाद पर निरन्तर अनुसंधान की आवश्यकता है. प्रकृति भारती के द्वारा भी लगातार तीन सालों से किसानों को नाडेप पद्धति से पूरी तरह से जोडने के लिये प्रकृति सम्मेलनों का आयोजन किया गया है.

2005 में भी प्रकृति सम्मेलन का आयोजन नोयडा में 9, 10, 11 दिसम्बर को किया गया था. वर्तमान में भारत में सरकार भी नाडेप खाद को बढ़ावा देना चाहती है. सरकार स्वयं किसान मेलों, प्रदर्शनों, सम्मेलनों, उत्सवों में नाडेप खाद बनाने की विधि सरल हिंदी में प्रकाशित कर निःशुल्क उपलब्ध करवा रही है. भारत में हर गांव में पंचायत स्तर पर किसानों को नाडेप खाद बनाने का संपूर्ण प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है. भारत सरकार को गंभीरता के साथ नाडेप खाद तैयार करने के लिये स्वयंसेवी संस्थाओं को प्रोत्साहन देना होगा.

नाडेप खाद तैयार करने के लिये भारत की कुछ गोशालाओं कलकत्ता पिंजरापोल सोसायटी चाकुलिया झारखंड 832301 दूरभा-न 06594-233090, 233275 श्री पुरु-नोत्तम जी झुनझुनवाला के मार्गदर्शन में 1916 से 314 गोवंश रखकर 65 एकड़ भूमि पर खादी ग्रामोद्योग के सहयोग से कार्य कर रही है. 1000 किसानों को नेडेप खाद बनाने का प्रशिक्षण दे रही है.

कानपुर गोशाला सोसायटी, 55/112 गोशाला भवन जनरलगंज कानपुर, उज्ज्वल गोरक्षण केंद्र बंजारीधाम, रांवाभाटा, रायपुर, छतीसगढ, उज्ज्वल गोरक्षण केंद्र, कामधेनु भवन, शनिचरी बाजार, दुर्ग, छतीसगढ, श्री गोशाला, पानीपत, हरियाणा, ग्रामोपयोगी विज्ञान केंद्र, मगनवाडी, वर्धा, गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र, सेवाधाम, मुकाम एवं डाकघर देवलापार तहसील रामटेक जिला नागपुर 441408, प्रधान कार्यालय कामधेनु भवनपंडित बच्छराज व्यास चौक, चितार ओली महाल, नागपुर 440032, श्री मोहनशंकर देशपांडे, ग्राम आजरा, जिला कोल्हापुर, सुरभि शोध संस्थान, रविंद्रपुरी, वाराणसी उत्तरप्रदेश में वर्तमान में संपूर्ण प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है.

नाडेप खाद भारत में किसानों में सबसे अधिक लोकप्रिय जैविक खाद है. कम से कम गाय के गोबर से अधिक से अधिक मात्रा में खाद बनाने की यह सबसे सफल पद्धति है. भारत में नाडेप खाद की मांग बहुत ही अधिक है. मांग के अनुसार नाडेप खाद के उत्पादन करने के लिये संगठित प्रयास करने की आवश्यकता है. नाडेप खाद बनाने के लिये भारत के उर्जावान, संस्कारी, शिक्षित युवाओं को संपूर्ण प्रशिक्षण लेकर बड़े स्तर पर प्रशिक्षण देने के लिये कार्य करने की आवश्यकता है. स्वर्गीय नाडेप काका के अनुसार 4 करोड़ बेरोजगार युवाओं को गांवों में नाडेप खाद तैयार करने पर सम्मानजनक रोजगार निश्चित रूप से प्राप्त होगा.

रासायनिक खाद का उपयोग वर्तमान में भारत में कम नहीं हो रहा है जिसके कारण किसान नाडेप खाद का उपयोग करना नहीं चाह रहे हैं. 1 गाय से 1 साल में नाडेप खाद तैयार कर किसान के द्वारा 1 लाख रुपये कमाना संभव है. 1 गाय के गोबर से नाडेप पद्धति से साल भर में 80 टन से 100 टन यानी कम से कम 150 गाडी खाद तैयार करना संभव है. 80 टन खाद में 800 किलो नाइट्रोजन, 560 किलो फास्फोरस, पोटास 1040 किलो, सूक्ष्म अन्न द्रव्य 77600 किलोग्राम प्राप्त होता है. नाडेप खाद के प्रयोग किसानों के द्वारा अपने खेतों में करने से 3 साल में रासायनिक खाद से पूरी तरह से मुक्ति मिलना संभव है. प्रथम साल में ही नाडेप खाद का स्वभाव फसल को पूरी तरह से मिलना संभव नहीं है.

प्रथम साल में 33 प्रतिशत, द्वितीय साल में 45 प्रतिशत, तीसरे साल 22 प्रतिशत मिलता है. रासायनिक खाद का आयात पूरी तरह से भारत में बंद करने के लिये भारत में नाडेप खाद की बिक्री बड़े स्तर पर करने के लिये उद्योगपतियों को वर्तमान में सामने आना अनिवार्य है. नाडेप खाद तैयार करने से खेतों में पानी की आवश्यकता में उल्लेखनीय कमी आयेगी. गोपालन को बढ़ावा मिलेगा. गांव की गंदगी एवं कूड़े करकट का उपयोग नाडेप खाद के लिये होने के कारण गांव साफ एवं आरोग्यवर्धक रहेगा. नाडेप खाद गांव में तैयार करने पर गांव अपनी आवश्यकता के लिये स्वावलंबी होगा.

गांव में नाडेप खाद तैयार होने पर रोजगार बहुत बड़े स्तर पर लोगों को मिलेगा.

नाडेप फास्फो कंपोस्ट

नाडेप फास्फो कंपोस्ट नाडेप के समान ही कंपोस्ट तैयार करने की विधि है. अंतर केवल इतना है कि इसमें राक फास्फेट का उपयोग अन्य सामग्री के साथ किया जाता है जिसके फलस्वरूप तैयार खाद में फास्फेट की मात्रा बढ़ जाती है. नाडेप फास्फो कंपोस्ट एक जैविक एवं प्राकृतिक खाद है. नाडेप फास्फो कंपोस्ट का निर्माण करने के लिये फसल के बचे पदार्थों, गाय माता के गोबर, गोमूत्र एवं अन्य प्रकार के कार्बनिक बचे पदार्थों का उपयोग किया जाता है. कार्बनिक पदार्थों में राक फास्फेट जैसे खनिज पदार्थों को मिलाकर तथा सूक्ष्म जीवियों के निवेशन के माध्यम से अघुलनशील तत्वों को घुलनशील तत्वों में बदला जाता है.

यह तत्व पेड पौधों को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं. नाडेप फास्फो कंपोस्ट तैयार करने के लिये प्रत्येक परत के उपर 12-15 किलो राक फास्फेट मिलाया जाये. नाडेप फास्फो कंपोस्ट खाद तैयार करने और उपयोग करने का चलन किसानों को नहीं मालूम होने के कारण ही भारत में बहुत ही कम है. नाडेप फास्फो कंपोस्ट तैयार करने का संपूर्ण प्रशिक्षण साहित्य सरल हिंदी तथा क्षेत्रीय बोलचाल में वीडियो सीडी तथा प्रचार प्रसार के सभी साधनों समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, दूरदर्शन, चैनलों में भारत के गांवों में पंचायत स्तर पर किसानों को आसानी से उपलब्ध करवाने पर बहुत लोकप्रिय होगा.

कंपोस्ट बनाने की चार गडढा विधि

प्रस्तावना

भारत में हर साल निकलने वाले 30,000 लाख टन कार्बनिक अवशेष-बहुत बड़ी समस्या है. 3200 लाख टन कृषि जनित व्यर्थ प्रतिवर्ष पैदा होता है जिसमें धान का पुआल, गेहूं का भूसा, मूंगफल्ली, काफी का छिलका, कपास आदि के डंठल मुख्य हैं. केवल गन्ने की खोई के रूप में 40.92 लाख टन हर साल उत्पन्न होता

है. 2000 लाख टन व्यर्थ द्रव तथा जानवरों के मलमूत्र के रूप में उत्पादित होता है. केचुओं को खाने के लिये आवश्यक भोजन में पौधों के डंठल, पत्तियां, भूसा, दानों तथा फल्लियों के छिलके, गन्ने की खोई, खरपतवार, फार्म यार्ड मेन्योर आदि, फल, बागवानी के कचरे, फलों के छिलके, सब्जी के छिलके, केले के पत्ते, केले के तने के छिलके, नारियल के पत्ते, नारियल के छिलके आदि, सड़ी गली लकड़ी, लुगदी, छीलन, बुरादा, तने, टहनियां, गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा, गधा, सुअर आदि का मलमूत्र, बायो गैस की स्लरी, सब्जी मंडियों का कचरा, तेल निकालने के बाद बचे तने, पत्तियां, फूलों के अवशेष, फलों के गूदे, बीजों के अवशेष, बीजों की भूसी, पल्प आदि का उपयोग किया जाता है.

वर्तमान समय में भारत में हरित क्रांति के नाम पर 40 सालों से खेती करने के नाम पर यूरिया, डाई अमोनियम फास्फेट, सिंगल सुपर फास्फेट, जिंक सल्फेट, कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का उपयोग किया जाता है. यूरिया में नाइट्रोजन की मात्रा सबसे अधिक 45 प्रतिशत होती है. यूरिया अमोनियम फास्फेट में 28 प्रतिशत नाइट्रोजन है. अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट में 26 प्रतिशत नाइट्रोजन है. सिंगल सुपर फास्फेट में कैल्शियम की मात्रा सबसे अधिक 20 प्रतिशत है. अमोनियम सल्फेट में सबसे अधिक 24 प्रतिशत सल्फर की मात्रा मौजूद है. पोटेशियम सल्फेट में पोटैस की मात्रा सबसे अधिक 50 प्रतिशत है. डाई अमोनियम फास्फेट में फास्फोरस की मात्रा सबसे अधिक 46 प्रतिशत है. भारत में दक्षिण भारत में कर्नाटक एवं केरल में सेंट्रल क्रोप रिसर्च इंस्टीट्यूट, कसारगोड़ में वर्मी कल्चर को लोकप्रिय बनाया गया है. कर्नाटक में बेंगलोर में बहुत अधिक अनुसंधान किये गये हैं.

बड़े स्तर पर केंचुआ खाद तैयार करने के लिये कर्नाटक के किसान सफल हुए हैं. उत्तर भारत में 1995 से केचुआ खाद की ओर ध्यान गया है लेकिन केंचुओं के बारे में संपूर्ण जानकारी का अभाव है. उत्तर भारत में यूपीडास्प ने वर्मी कल्चर को लोकप्रिय बनाने के लिये बहुत अधिक मेहनत की है. उत्तर भारत में गोपालन बहुत अच्छा है इसलिये उत्तर भारत में वर्मी कल्चर पर बहुत अधिक कार्य करने की आवश्यकता है. वर्तमान में केंचुआ खाद से ही इस समस्या का समाधान

संभव है. चार गढढा विधि से कार्बनिक अवशेषों की समस्या आसानी से हल की जा सकती है. कार्बनिक अवशेषों की समस्या हल होने पर भारत के खरबों रुपयों की बचत हर साल होगी. अमेरिका, कनाडा, ब्राजील, मेक्सीको, फिलिपाइन्स, यूनाइटेड किंगडम, मलेशिया, इंडोनेशिया, हांगकांग, जापान में वर्तमान में बहुत बड़े स्तर पर केचुओं का उपयोग वर्मी कल्चर तैयार करने के लिये किया जाता है.

अमेरिका में 90,000 केचुआ फार्म कार्यशील हैं और जापान को हजारों डालर के केचुए निर्यात किये गये हैं. जापान 15,000 टन जीवित केचुआ ईल मछली के संवर्धन के लिये आयात करता है. जापान 15,000 टन केचुआ कागज एवं धागा मिलों के व्यर्थ को पुनः चक्रित करने हेतु आयात करता है. अमेरिका वर्मी कल्चर का उपयोग मलमूत्र अवमल तथा कार्बनिक पदार्थों को पुनः चक्रित करने का कार्य व्यवसायिक स्तर पर किया जा रहा है. कनाडा अमेरिका को 30,000 डालर के केचुओं का निर्यात हर साल करता है. भारत को बहुत बड़ी मात्रा में केंचुआ खाद खेती करने के लिये मिल सकेगा. रासायनिक खाद के आयात करने से हमेशा के लिये मुक्ति मिलेगी. गोसेवा आयोग, भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड, वन विभाग, उद्यानिकी विभाग, खादी ग्रामोद्योग, कृषि विभाग वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाते हैं. वर्तमान में कर्नाटक सरकार केंचुआ खाद बनाने के लिये भारत में सबसे आगे है.

भारत में चार गढढा विधि को लोकप्रिय बनाने के लिये अखिल विश्व गायत्री परिवार सबसे आगे है. 84 देशों में अखिल विश्व गायत्री परिवार सतत 1953 से प्रयत्नशील है. रक्त कैंसर, मुंह का कैंसर, मसूढ़ों का कैंसर, गले का कैंसर, ग्रासनली का कैंसर, आमाशय का कैंसर, आंतों का कैंसर, गुदा कैंसर, यकृत का कैंसर, फेफड़ों का कैंसर, अंडकोष का कैंसर, लिंग का कैंसर, आंख का कैंसर, गुर्दे का कैंसर, मूत्राशय का कैंसर, गर्भाशय की रसौली का कैंसर, स्तन का कैंसर, गर्भाशय का कैंसर, लसिका ग्रंथि का कैंसर, अस्थि का कैंसर, जीभ का कैंसर, निचले होंठ का कैंसर, बाल्यावस्था के कैंसर, त्वचा का कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर, एडस, उच्च रक्तचाप, वात, नजला, सिरोसिस, सिफलीस, क्षय रोग, हकलाना, अंधापन, बहरापन, रतौंधी, टाइफाइड,

मस्तिष्क ज्वर, डेंगू, बुखार, पेट में दर्द, हडडी के रोग, बवासीर, दांत के रोग, त्वचा के रोग, सेक्स के रोग, बालों का झड़ना, बालों का असमय पकना, बड़ी आंत की बीमारी, जलोधर, गर्भपात, नपुंसकता, रक्त की खराबी, मधुमेह, आमाशय की बीमारी, यकृत की बीमारी, हाइड्रोसिल, अतिसार, संग्रहणी, गैस, कब्ज, मूत्राशय की बीमारी, स्वप्नदोष, मोटापा, मिर्गी, उन्माद, मूर्छा, पागलपन, स्मृतिनाश, मंदबुद्धि, मानसिक विकलांगता, मासिक धर्म की अनियमितता, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, बांझपन, हृदय रोग, सांस की बीमारी, गुर्दे की बीमारी, रक्त की कमी, हीपेटाइटिस बी यानी यकृत कामला, कामला पर पूरी तरह से रोक लगा सकता है।

विश्व में 8 करोड़ से अधिक लोगों की मौत हर साल इन बीमारियों के कारण तड़फ तड़फ कर हो रही है। चार गडढे के चक्रीय तंत्र की संरचना की बहुत सारी खूबियां हैं। भारत में गांवों में चार गडढा विधि लोकप्रिय बनाने पर किसानों को बहुत लाभ प्राप्त होगा। वर्तमान में चार गडढा विधि बहुत ही आसान व सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें खाद बनाने के लिये किसान को कोई अतिरिक्त श्रम अथवा समय देने की जरूरत नहीं है। चार गडढा विधि में कार्य का एक छोटा सा हिस्सा बन सकता है। किसानों को आसानी से हर गांव में केंचुओं को उपलब्ध करवाने के लिये केंचुआ बैंक की तुरन्त ही आवश्यकता है। केंचुआ बैंक में से केंचुआ किसानों को मिल जाने से बहुत बड़ी मात्रा में केंचुआ खाद तैयार हो सकेगा।

रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के कारण उत्पन्न खतरनाक जानलेवा बीमारियों से हमेशा के लिये मुक्ति मिल सकेगी। केंचुओं के एक गडढे से दूसरे गडढे में अपने आप चलने के कारण खाद से केंचुए निकालने एवं दूसरे गडढे में डालने का श्रम बच जाता है। खाद को पलटने की आवश्यकता नहीं है। चार माह बाद हर माह थोडा थोडा करीब 500 किलो खाद मिलता रहता है। अपनी आवश्यकता के लिये किसान तत्काल भी खाद का उपयोग कर सकता है तथा अगले साल की फसल के लिये भी खाद का संग्रहण किया जा सकता है। चार गडढे विधि में रोज निकलने वाले गाय के गोबर, मूत्र, खेती से निकलने वाले थोडे थोडे कचरे का बहुत अच्छा

उपयोग किया जाता है। गोपालन को बहुत अधिक बढ़ावा मिलता है।

केंचुआ एनीलिडा संघ, वर्ग आलिगोकोटा, गण ओलाइगोकोटा, वंश फेरिटिमा, जाति पोस्थुमा में आता है। समस्त विश्व में केंचुए केवल समुद्री रेगिस्तान व सदैव हिमपात वाले क्षेत्रों को छोड़कर सभी जगह पाए जाते हैं। विश्व के केंचुए 10 कुलों, 240 वंश, 4200 जातियों में वर्गीकृत किये गये हैं। केंचुओं में उनके आकार, रंग, भोजन की आदत, आवास वरियता, व्यवहार, प्रजनन क्षमता आदि के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। जल एवं थल के आधार पर दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया है। माइक्रोडिलाई जलीय होते हैं तथा इसमें लगभग 280 जातियां पायी जाती हैं। मेगाडिलाई धरती पर रहने वाले केंचुए हैं तथा 3920 जातियां विश्व में पायी जाती हैं। अनुकूलनशीलता के गुणों के आधार पर दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया है।

पेरेग्रिन व इंडेमिक. पेरेग्रिन अत्यधिक अनुकूलनशील तथा अधिक क्षेत्रों में वितरित होती है। इस प्रकार की 2 प्रजातियां आइसोनियां फेटिडा साधारण मलमूत्र कृमि तथा यूडिलस यूजेनिया अफ्रीकन रात्रि में रेंगने वाला समस्त विश्व में उपलब्ध है। इंडेमिक प्रजातियां एक ही वातावरण वाले स्थानों में पायी जाती हैं। इनकी अनुकूलनशीलता कम होती है तथा दूसरे वातावरण में रखने पर संवर्धन करना होता है।

भोजन आहार के आधार पर 2 भागों में विभाजित किया गया है। फाइटोफेगस अथवा डेटरिवोरस जो कार्बनिक पदार्थ खाने वाले केंचुए हैं जिसे सामान्यतः ह्यूमस फोरमर्स के नाम से जाना जाता है। जियोफेगस यानी ह्यूमस फीडर जो मिटटी खाने वाले केंचुए होते हैं। केंचुओं का आकार 6 इंच से लेकर 1.7 मीटर तक होता है। अधिकतर केंचुओं का रंग मांस के समान होता है। केंचुओं का रंग भूरा शरीर भित्ति में एक विशेष प्रकार के पिगमेंट के कारण होता है। केंचुए के शरीर पर अनेक छिद्र होते हैं। केंचुओं के शरीर की समस्त बाहरी सतह गोलाकार छल्लों में बटी प्रतीत होती है।

केंचुओं के समस्त शरीर की बाहरी सतह पर प्रत्येक खंड के बीच के भाग पर अत्यंत छोटे एवं सूक्ष्म कांटों का वलय जैसी कतार होती है. ये कांटे केंचुओं को चलने में मदद करते हैं. यद्यपि केंचुए में सांस लेने के लिये कोई विशेष अंग नहीं है. पाचन तंत्र मूलतः एक नली के आकार में होता है. आंत पाचन का मुख्य स्थान होता है. आंत में पाचन होता है. केंचुए अपनी प्रजाति के अनुसार भूमि की उपरी सतह पर पड़े गल सड़ रहे कूड़ा करकट की तह से लेकर भूमि की विभिन्न सतहों में रहते हैं. एण्डोजीइक तथा एनेसिक केंचुए मिट्टी में बिल बनाकर रहते हैं. एण्डोजीइक केंचुए भूमि की उपरी सतहों में 25 से 30 सेंटीमीटर तक की गहराई में उथली व धरातल के समतलीय बिल बनाकर तथा एनेसिक गहरी खड़ी सुरंगें बनाकर रहते हैं. ये केंचुए अपनी भोजन भक्षण क्रिया में रेंगते रहते हैं,

भक्षण करते रहते हैं तथा बिल बनाते रहते हैं एवं भूमि में बिलों का जाल सा बना देते हैं. केंचुए हर साल एक हेक्टेयर में 2 से 250 टन मिट्टी उलट देते हैं. 1 से 5 मिलीमीटर मिट्टी की सतह नीचे से उपर आ जाती है. अन्य विधियों से साधारण तथा बिना पौधों को हानि पहुंचाये मिट्टी को पलटना संभव नहीं है. इस प्रक्रिया से जोताई एवं मिक्सिंग दोनों ही कार्य होते हैं जिससे मिट्टी की सरंभ्रता बढ़ जाती है. पौधों को अपनी वृद्धि करने के लिये आवश्यक पोषक तत्व भूमि से प्राप्त होते हैं.

पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध करवाने की भूमि की क्षमता उसकी उर्वरता कहलाती है. इन पोषक तत्वों का मूल स्रोत गोबर, वनस्पतियों का अवशेष, फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स का अवशेष आदि हैं लेकिन पौधों के द्वारा इसी रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता है क्योंकि इनमें मौजूद पोषक तत्व अति जटिल रसायनों के रूप में बंधे हुए होते हैं और इनका विघटनीकरण ही वह प्राथमिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा इनका रुपान्तरण उस सरल रूप में होता है ताकि ये पौधों को उपलब्ध हो सके. यद्यपि वास्तविक विघटन प्रक्रिया सूक्ष्म जीवों द्वारा संपन्न होती है. एपिजीइक केंचुए माइक्रोबियल एकजीविटी को उत्तेजित कर देने की अपनी अनुपम गुण के कारण विघटन में सक्रिय भाग लेते हैं.

डिकंपोजिशन स्वीमुलेटर के रूप में केंचुओं की भूमिका लिंगिनियुक्त आसानी से विघटित न होने वाले कार्बनिक अवशेष के मामले में और भी अधिक है. केंचुए कार्बनिक अवशेषों को अपनी भक्षण व पाचन क्रिया से तोड़-फोड़कर बारीक करके माइक्रोबियल एकजीविटी हेतु सरफेश एरिया बढ़ाकर तथा वायुवीय वातावरण सुनिश्चित करके विघटन प्रक्रिया 25 से 40 प्रतिशत तक बढ़ा देते हैं. 1 किलोग्राम इपीजीइक केंचुए 4-5 किलोग्राम 40 से 50 प्रतिशत नमी वाले कार्बनिक अवशेष प्रतिदिन खाकर पचा सकते हैं. केंचुओं का पाचन तंत्र बड़ा ही व्यवस्थित होता है. उसके द्वारा खाया गया कार्बनिक अवशेष उसकी आंतों में पूरी तरह से चक्की जैसी पिसाई की प्रक्रिया से गुजरता है तथा उससे स्त्रावित म्यूकस के साथ मिलकर आसानी से अवशोषण योग्य कार्बोहाइड्रेड बहुत अधिक मात्रा में होता है. ये इन्टस्टाइन के माइक्रोफ्लोरा की वृद्धि एवं गतिविधि में तेजी लाता है.

आंत उफान लाने का कार्य करती है तथा केंचुओं के पाचक रसों एवं माइक्रोव्स की संयुक्त कारवाही से बायोफोलिमर्स जटिल यौगिक सरल यौगिकों में टूट जाते हैं. इस प्रकार विघटन की प्रक्रिया में केंचुआ भौतिक रूप में वायु संचारक, पीसने और मिलाने का तथा रासायनिक रूप में विघटक का तथा बायोलोजिकल रूप में स्वीमुलेटर का कार्य करता है. केंचुए द्वारा खाये गये कार्बन तथा नाइट्रोजन का अनुपात घट जाता है तथा जटिल रूप में बंधे हुए पोषक आसानी से उपलब्ध होने योग्य रूप में परिवर्तित हो जाते हैं. कार्बन नाइट्रोजन का अनुपात कार्बनिक अवशेषों के विघटन का माप है. केंचुओं की कास्ट का कार्बन नाइट्रोजन अनुपात खाये गये अवशेष से बहुत कम हो जाता है. केंचुए कार्बनिक अवशेष में से कार्बन का उपयोग उर्जा के रूप में करते हैं.

अपनी मेटाबोलिक यानी चयापचय की प्रक्रिया में कार्बन का कुछ भाग कार्बन डाई ओक्साइड के रूप में छोड़ देते हैं. उत्पादित म्यूकस एवं नत्रजनयुक्त मलोत्सर्ग से नाइट्रोजन का स्तर बढ़ जाता है. पाचित एवं विघटित कार्बनिक पदार्थ का बहुत कम अंश लगभग 5 से 10 प्रतिशत केंचुए के द्वारा अवशोषित किया जाता है तथा अधिकांश भाग जो कि अपेक्षाकृत स्थायी नमी के रूप में

होता है छोटी छोटी गोलियों एवं दानेदार गल के रूप में होता है बाहर निकलता है जिसे वर्मी कम्पोस्टिंग यानी केंचुआ खाद के नाम से जाना जाता है.

कार्बनिक अवशेष से आयतन में 40 से 60 प्रतिशत कमी हो जाती है. आयतन में इतनी अधिक कमी और अन्य किसी भी प्रकार के खाद में नहीं होती है. अन्य खादों की तुलना में अधिक पोषक तत्वों की मात्रा भी इसलिये केंचुआ खाद में होती है. भूमि की उर्वरता को बनाये रखने के लिये तथा पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने में सूक्ष्म जीवों की बहुत महत्वता है. इनके अभाव अथवा सक्रियता में कमी रहने पर निरन्तर रासायनिक खाद के रूप में डाले गये पोषक तत्व भी पौधों को नहीं मिल पाते हैं. इनकी संख्या, विविधता एवं सक्रियता के आधार पर ही मृदा की गुणवत्ता बनती और बिगड़ती है.

वातावरण हाइड्रोस्फीयर तथा लीथोस्फीयर में मौजूद माइक्रोओर्गेनिज्म की जटिल श्रृंखला जीवों और पौधों के अंशों पर मृत्यु होने के क्षण से ही सक्रिय कार्य करती है. किसी भी पौधे, जन्तु सूक्ष्म जीव में यदि कोई भी मृत्यु उत्पन्न है तो वह तुरन्त ही माइक्रोब्स द्वारा आक्रमण कर दिया जाता है. बैक्टेरिया और फुंजी का यह सेपरोफाइटिक ग्रुप कहलाता है, जो कि तन्तुओं के जटिल प्रोटोप्लाज्मिक अंशों को तोड़ फोड़ के कार्य को प्रारम्भ करता है. मृत तंतुओं पर काम करने वाला तथा रासायनिक जटिलता के बंधनों को ढीला करने वाला चूंकि माइक्रोब्स का यह प्रथम ग्रुप है, इन्हें प्राइमरी डिकंपोजर भी कहते हैं. प्राइमरी डिकंपोजर कार्बनिक पदार्थ की कार्बन को उर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं और अपने को माध्यम में स्थापित करते हैं. आगे श्रेणीबद्ध अनुक्रम में माइक्रोब्स के कई समूह की गतिविधि के परिणामस्वरूप अंतिम अवस्था में खेती में केंचुआ खाद के प्रयोग करने से मिट्टी में जलक्षरण क्षमता अच्छी होती है.

केंचुआ सेंद्रिय पदार्थ, नमी, मिट्टी को एकसार करके जमीन के अंदर अन्य परतों में फैलाता है इससे जमीन पोली होती है व हवा का आवागमन बढ़ जाता है तथा जलधारण की क्षमता भी बढ़ जाती है. केंचुआ के पेट में जो रासायनिक क्रिया व सूक्ष्म जीवाणुओं की

क्रिया होती है, उससे भूमि में पाये जाने वाले नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैश, कैल्शियम व अन्य सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है. ऐसा पाया गया है कि मिट्टी में नाइट्रोजन 7 गुना, फास्फोरस 11 गुना, पोटैश 14 गुना बढ़ जाता है. केंचुआ खाद में लाभकारी सूक्ष्म जीव नाइट्रोजन फिक्सिंग जीव, फास्फेट सोल्यूबिलाइजिंग जीव, फंजाई, एक्टिनोमाइसीन, बहुत सारे पौलीमर्स जैसे सेलूलोज व लिगनिन को विघटित करने की क्षमता रखने वाले सूक्ष्म जीव. बायोएक्टिव यौगिक आग्नीन्स, जिब्लेलिन्स, साइटोकाइनिन्स, विटामिन, अमीनो अम्ल, ह्यूमिक अम्ल हैं.

केंचुआ खाद में गोबर खाद की तुलना में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैश, अन्य सूक्ष्म तत्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं. कंपोस्ट खाद में 0.5 से 1.5 प्रतिशत नाइट्रोजन होता है जबकि केंचुआ खाद में 2.5 से 3 प्रतिशत होता है. कंपोस्ट खाद में फास्फोरस 0.5 से 0.9 प्रतिशत है जबकि केंचुआ खाद में 1.5 से 2 प्रतिशत होता है. पोटैश कंपोस्ट में 1.2 से 1.4 प्रतिशत है जबकि केंचुआ खाद में 1.5 से 2 प्रतिशत है. केंचुआ खाद में ओर्गेनिक कार्बन की मात्रा 17.98 प्रतिशत तक है. केंचुआ खाद में सोडियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, तांबा 2 से 9.5 पी.पी.एम., लोहा 2 से 9.3 पी.पी.एम., जिंक 5.7 से 11.5 पी.पी.एम., गंधक 128 से 548 पी.पी.एम. मौजूद है.

कंपोस्ट बनाने की विधि

इस विधि में एक 12 फीट लम्बा 12 फीट चौड़ा तथा 2.5 फीट गहरा बड़ा गडढा बनाया जाता है. इस गडढे को ईंट की दीवारों से चार बराबर भागों में बांट दिया जाता है. इस प्रकार चार गडढे बनते हैं. प्रत्येक गडढे का आकार लगभग 5.5 फीट लम्बा, 5.5 फीट चौड़ा तथा 2.5 फीट गहरा होता है. यदि खेतों से एकत्रित होने वाले प्रतिदिन कचरे की मात्रा 40 किलो से अधिक है तो मुख्य गडढे की लंबाई 20 फीट तक बढ़ाई जा सकती है. चौड़ाई तथा गहराई में परिवर्तन नहीं किया जाता क्योंकि पूरे गडढे में हवा का वहन ठीक प्रकार से हो सके. चार गडढा तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्री में ईंट 1000 नग, सीमेंट 3 बोरी, रेत 50 सीएफटी, मुर्गा जाली यदि आवश्यक हो तो चाहिये.

यदि बरसात के दिनों में गडढे में पानी जमा हो तो गडढे में खाद नहीं बनानी चाहिये. दूसरी जगह पर जमीन के उपर 2.5 फीट उंचे टैंक बनाये जाते हैं. 1000 ईट का खर्च बढ जाता है. चारों गडढे पेड की छांव में बनाये जायें तो धूप एवं बारिश से बचाने के लिये अतिरिक्त शेड की आवश्यकता नहीं पडती है. हर साल 3 से 4 टन खाद प्राप्त किया जा सकता है.

चार गडढे भरने की पद्धति

चार गडढों को एक के बाद एक भरते हैं. पहले महीने तक पहला गडढा भरें. पहला गडढा पूरा भर जाने के बाद काले पोलीथीन से ढक दें ताकि उसके विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सके. उसके बाद दूसरे माह में दूसरे गडढे में कचरा एकत्र करना प्रारम्भ कर दें. दूसरे माह बाद जब दूसरा गडढा भर जाये तब पहले गडढे का कचरा अपघटित हो जाता है. एक दो दिन बाद पहले गडढे की गर्मी कम हो जाये तब उसमें 500-1000 केंचुएं छोड दिये जायें और पूरे गडढे को घास की पतली थर से ढक दिया जाये. इसी प्रकार तीन माह बाद जब दूसरे गडढे की गर्मी कम होने पर उसमें केंचुए छोड दिये जाते हैं. पहले गडढे में केंचुआ खाद तैयार हो जाता है.

पहले गडढे के केंचुए बीच की दीवार से दूसरे तथा तीसरे गडढे में प्रवेश कर जाते हैं. 8 माह बाद 4000 किलो खाद तैयार हो जाती है. चार गडढा विधि वर्तमान में किसानों में लोकप्रिय नहीं है. चार गडढे की विधि को लोकप्रिय बनाने के लिये खेतों में किसानों को प्रत्यक्ष करके दिखाना अनिवार्य है. प्रत्यक्ष करने के पूर्व वीडियो सीडी में चार गडढा विधि को रिकार्ड कर किसानों की मानसिकता तैयार करने के लिये भूमिका बनानी होगी. किसान को चार गडढे के बारे में पूरी तरह से समझ में आने पर किसान रासायनिक खाद से बाहर निकलकर स्वयं ही मेहनत करने लगेगा. केंचुओं की मात्रा भी चार गडढा विधि में कुछ दिनों में बहुत अधिक बढ जाती है. केंचुआ खाद तो बहुत अधिक लोकप्रिय है लेकिन चार गडढा विधि के बारे में लोगों को पता नहीं है.

नील हरित कार्ड

नील हरित कार्ड प्रमुख रूप से कुछ ऐसे सूक्ष्म जीवाणुओं का समूह है जिसमें वायुमंडल में स्थित गैसीय नाइट्रोजन तत्व को स्थिर व स्थापित करने की क्षमता रखता है. इन्ही सूक्ष्म जीवाणुओं को एक तकनीक से उत्पादित किया जा सकता है. जिसका संचयन मिटटी आधारित होता है. चूंकि इन नाइट्रोजन स्थापित करने योग्य जीवाणुओं की प्रकृति धान फसल लेने जैसा होता है इसलिये इनका उपयोग धान के फसल में लाभप्रद होता है. नील हरित कार्ड को गांव गांव में लोकप्रिय बनाने के लिये मेहनत करने की आवश्यकता है. नील हरित कार्ड के बारे में बहुत ही कम लोगों को जानकारी है. इन्हें ही नील हरित कार्ड जैविक उर्वरक के नाम से जाना जाता है. इस जैव उर्वरक के सूखे पावडर को खडे धान के फसल में उपचारित करने पर 20-25 किलो नाइट्रोजन की पूर्ति उस फसल को करता है. साथ ही फसल उपरान्त इस जैव उर्वरक का बचा हुआ भाग सेंद्रिय खाद का कार्य करता है जो इस खेत की तासीर की रक्षा करते हुए खेत की मिटटी की उर्वरकता को बनाये रखता है. नील हरित कार्ड का उपयोग हानि रहित मुक्त वातावरण का निर्माण करने में भी सहायक होता है.